मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
।। तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्र प्रचोदयात् ।।

## गुरु वाणी से सिंचित ऑडियो कैसेट

# जिसमें ज्ञान एवं क्रिया की गंगा है

### ★ साबर तन्त्र साधना

सम्पूर्ण तन्त्र साहित्य का सार साबर तन्त्र में निहित है, किस प्रकार तन्त्र का किस समय प्रयोग किया जाय, कहां साबर तन्त्र अचूक रहेगा, ऐसी दुर्लभ कैसेट गुरु वाणी में पहली बार।

दो भाग में तीस से अधिक साबर तन्त्रों का विवेचन, शंका समाधान, प्रयोग विधि।

### ★ माता तेरी महिमा महान

मां दुर्गा तो आदि शक्ति, त्रैलोक्य अधिष्ठात्री देवी हैं, जिसने दुर्गा साधना का मर्म अपने भीतर उतार लिया, उसने अपना अन्धकार मिटा दिया, मां दुर्गा की साधना का एक अद्भुत पहलू, जिसमें सोलह योग विधाओं का गुरु वाणी में विवेचन है।

### ★ मन्त्रजा सिद्धि : इष्ट सिद्धि

इष्ट देव प्रबल होना साधक में दिव्यता भर देता है, और इष्ट सिद्धि मन्त्र द्वारा किस प्रकार सम्पन्न की जाय, परत दर परत रहस्यों का सम्पूर्ण विवेचन।

**प्रत्येक कैसेट का रियायती मूल्य–२१)रु०**

: सम्पर्क :

**मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान**

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राज०)

वर्ष–११

अंक–७

जुलाई-१९९१



: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग,
हाईकोर्ट कालोनी,
जोधपुर–३४२००१ (राज०)
टेलीफोन : ३२२०९

**आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः**

मानव जीवन की सर्वतोण्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

# मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

## प्रार्थना

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यां वहोरात्रे पार्श्वे
नक्षत्राणि रूप मश्विनौ व्यात्तम् ।

हे भगवती लक्ष्मी ! आप श्री देने वाली, समृद्धि सुख और ऐश्वर्य प्रदान करने वाली हैं, आप मेरे घर में आकर स्थायी रूप से निवास करें ।

# निश्चित कर लो अपना लक्ष्य

# फिर न कहना कि हम चूक गये

जब कोई निश्चित क्रम टूटता है, तो उसे व्यतिक्रम कहते हैं, और यह व्यतिक्रम एक बिखराव पैदा करता है, और यह बिखराव ही आगे चल कर एक बड़े कार्य का कारण बनता है, यदि तुम जल में एक छोटा पत्थर भी फेंकोगे तो जल में लहरें चक्र रूप में अवश्य बनेंगी, क्या तुम्हारे जीवन में भी लहरें बन सकती हैं ? अथवा स्थिर जल की भांति ही उसमें कोई क्रिया-प्रतिक्रिया नहीं होगी ?

लहरें बहते जल में नहीं बनतीं, केवल स्थिर जल में ही बनती हैं, क्योंकि स्थिर जल भी बहना चाहता है, उसी प्रकार तुम्हें अपने जीवन में भी लहरें उत्पन्न करनी हैं, उसके लिए तुम्हें न तो कोई दिन निश्चित करना है, न मुहूर्त, न कोई निश्चित अवधि, तुम सोचते हो कि अभी क्या है, अभी तो जीवन बहुत पड़ा है, कुछ करना है चाहे वह ध्यान हो, जप हो, योग हो, दर्शन हो, बुढ़ापे में कर लेंगे ! जब ऊर्जा जो कि शक्ति स्वरूप है, तुम्हारे भीतर तीव्र है, तब तुम कुछ करते नहीं हो, उसे ऐसे ही नष्ट होने दे रहे हो, वैज्ञानिकों ने एक सर्वेक्षण में एक हजार लोगों की जीवन शैलियों का, उनकी कार्य क्षमता का, शरीर के **'मेटाबॉलिज्म'** का अध्ययन किया, मस्तिष्क की शक्ति का परीक्षण किया, उनके रहन-सहन का, पारिवारिक पृष्ठ भूमि, उनके कार्यों का सम्पूर्ण अध्ययन किया, और आपको उनके परिणाम जानकर आश्चर्य होगा ।

यह स्पष्ट हुआ कि सामान्य मनुष्य अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा, शक्ति, कार्यक्षमता का केवल १५ प्रतिशत से २४ प्रतिशत तक ही प्रयोग में लाता है, बाकी सारी शक्ति को व्यर्थ गंवा देता है ।

७८ प्रतिशत व्यक्ति एक बार जो कार्य अथवा जीवन शैली अपना लेते हैं, उसे छोड़ना ही नहीं चाहते हैं, उसमें थोड़ा सा भी व्यवधान आ जाय, तो परेशान हो जाते हैं, स्वभाव में चिड़-चिड़ापन, अनिद्रा इत्यादि आ जाती हैं ।

६४ प्रतिशत व्यक्ति स्वाभाविक आवेश में आ कर निर्णय ले लेते हैं, उस निर्णय पर लम्बे समय तक केवल १२ प्रतिशत लोग ही कायम रहते हैं, बाकी फिर कोई निर्णय ले लेते हैं ।

**पुरुष स्त्रियों की अपेक्षा मानसिक संतुलन ज्यादा खोते हैं, उनमें निश्चय- अनिश्चय की भावना ज्यादा रहती है।**

७१ प्रतिशत अपने बारे में जितना नहीं सोचते, उतना दूसरों के बारे में सोचते हैं, अपनी ऊर्जा खुद को ऊंचा उठाने में नहीं, अपितु दूसरे को नीचा लाने में व्यय कर देते हैं।

## आप किस श्रेणी में हैं ?

मैं जब बार-बार तुम लोगों को कहता हूं, कि अपने आपको पहिचानो, अपनी शक्ति को पहिचानो, अपने चिन्तन, अपनी कार्य शैली में बदलाव लाओ, तो तुम लोग छोटी-छोटी बातें सोचने लगते हो, अपने जीवन में छोटे-छोटे लक्ष्य बांधते हो, अपनी क्षमता को पूर्ण रूप से नहीं पहिचानते हुए, ज्यादातर कार्यों को असंभव मान कर पहले से ही दूर हो जाते हो, मैं तुम्हें इतिहास के महान उदाहरण नहीं दूंगा, यह उदाहरण हो सकता है अपवाद स्वरूप हों, लेकिन इतना निश्चित है, कि तुम्हारे भीतर शक्ति है, और जब शक्ति का विकास होगा तो क्षमता का विकास होगा, तुम किसी छोटे गांव में रह रहे हो अथवा कस्बे में, अथवा महानगर में, इससे तुम्हारी शक्ति पर कोई अन्तर नहीं पड़ता है, यदि तुम अपने भीतर शक्ति को जाग्रत करने में समर्थ हो जाओगे, तो उसे कोई भी स्थान रोक नहीं सकता, सूर्य, बिहार के छपरा जिले में भी वही दिखता है, और बम्बई में भी वही सूर्य दिखता है।

**मुझे भी गुस्सा आता है, क्रोध आता है, मेरे ऐसे साधकों पर जो अकर्मण्य हैं, जो बहुत कुछ कर सकते हैं, लेकिन उन्होंने अपने शक्ति स्रोत पर इतनी अधिक राख ढंक ली है, कि वे स्वयं की पहिचान ही नहीं पा रहे हैं, वे "एक रूटीन" बन गये हैं, कुछ नया करने का सोचते तो हैं, लेकिन उस पर अमल नहीं करते, अपने आपको घसीट रहे हैं, और घिसट-घिसट कर तो कहीं भी नहीं पहुंच सकते।**

## अब तो कुछ करना ही है !

अब तुम्हें सबसे पहले आत्म विश्लेषण की प्रक्रिया प्रारम्भ करनी है, एक राह निश्चित करनी है, और उस पर अमल करना है, जो मार्ग तुम्हें रुचिकर लगे, और जो तुम्हें लक्ष्य तक पहुंचा सके, उस मार्ग को अपनाना ही है, उसके लिए एकदम उठ खड़े होना है, यह सोचना है कि अब मेरा नया जन्म हुआ है, और मेरे लिए एक-एक क्षण कीमती है।

याद रखो कि जीवन में अवसर बार-बार नहीं आते हैं, जब मैं पुकारता हूं तो उस पुकार के पीछे कई कारण होते हैं, और जब तुम मुझे पुकारते हो तो यदि मैं आता हूं, तो उसके पीछे भी कई कारण होते हैं, तुम्हें अपनी अनुभुतियों को, अपनी चेतनाओं को तीव्र बनाना है, तो उसके लिए अपने-आपको नये रूप में देखना प्रारम्भ कर दो, अनुभूतियों को पकड़ना है, और यह पकड़ तुम्हें साधना के माध्यम से प्राप्त हो सकती है।

साधना करो तो अपने आपको पूर्ण रूप से केन्द्रित कर साधना, मन्त्र जप, अनुष्ठान सम्पन्न करो, ये साधनाएं तुम्हारे भीतर जमी हुई राख को हटा कर तुम्हारी शक्ति को, तुम्हारी ऊर्जा को पुनः चैतन्य बना देंगी।

गुरु तो एक जलता हुआ दिया है, और यदि तुम एक दिये से अपना दिया जागृत कर लेते हो तो उस दिये की शक्ति में, रोशनी में कोई अन्तर नहीं पड़ता है, तुम्हें तो केवल लेना भर है।

उपासना आखिर क्या है ? उपासना एक जलते हुए दिये से दूसरा दिया जलाना है, और यदि मैं कहता हूं कि इसीलिए तुम मेरे पास आ जाओ तो तुम्हें आना ही है, तुम्हें तो केवल इतना ही करना है, बाकी तो तुम्हारे भीतर की ऊर्जा अपने आप करेगी।

**गुरु के भीतर उर्जा का अक्षय भण्डार है, उसे किसी ईंधन की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि गुरु की ऊर्जा दिव्यता होती है, उस दिव्यता से तुम्हें अपनी ऊर्जा, जो मन्द पड़ गई है, जो बुझ रही है, उसे जागृत करना है।**

## अब अपने को हीन मत समझो

तुम संसार में गृहस्थ में ही रहे हो, तो ऐसा मत समझो कि तुम्हारे बन्धन बहुत कठोर हैं, तुम्हारे बन्धन तो बहुत पतले हैं, उसमें नित्य आशाओं, आकांक्षाओं के विचार पनपते हैं तुम्हारे भीतर "मैं" भी नहीं हैं, क्योंकि जब तुम मेरे पास आते हो तो अपने "मैं" का त्याग कर देते हो, जब यह अकड़ भी नहीं है तो तुम अपना विस्तार कर सकते हो, अपने आप को पहिचान कर अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते हो।

तुम्हारे पास तो सहारा है, सामर्थ्य हैं, और भी बहुत कुछ ऐसा है, जो दूसरों के पास बिल्कुल ही नहीं है, इसलिए तुम्हारा जीवन दूसरों के जीवन से अलग तो बन ही गया है, केवल इस अलग का विस्तार करना है।

हीनता तुम्हें भीतर ही भीतर खा जायेगी, अपने आपको पूर्ण समर्थ, सामर्थ्यवान समझते हुए कार्य करना प्रारम्भ कर दो, जब प्रारम्भ कर दोगे तो वह कार्य पूरा होगा ही, तुम्हें अनुभूतियां भी प्राप्त होंगी, चिन्तन के नये आयाम बनेंगे और एक विस्तार होगा, उस विस्तार में भी तुम्हें बहुत कुछ याद रखना है, अन्यथा दो-चार साल बाद पुनः वही स्थिति आ जायेगी, जब तक भीतर से प्रबल समर्थ नहीं होवोगे, तब तक कुछ भी नहीं हो सकेगा।

## अपनी सुविधाओं को छोड़ना ही पड़ेगा—

यदि तुम शिष्य हो, तो तुम्हारे पास केवल दो ही मार्ग हैं, या तो तुम अपने अनुसार चलो या फिर मेरे कहे अनुसार चलो, जब तक तुम अपनी सुविधा देखते रहोगे, तब तक तो तुम्हें कुछ भी नहीं मिल सकता है, तुम्हें मिलेगा जब तुम अपने आपको अलग मार्ग पर ले जाओगे, स्वर्ण को भी शुद्ध करने के लिए तपाना पड़ता हैं, हीरे को भी श्रेष्ठ बनाने के लिए उसमें काट-छांट करनी पड़ती है, यदि तुम चोटों से घबराओगे तो निखर नहीं सकोगे, यह समय तुम्हें कुछ पीड़ा अवश्य देगा, लेकिन यह पीड़ा तुम्हें आनन्द की दिशा में ही ले जायेगी, संकल्प सिद्धि, कार्य सिद्धि, ये सब तो आपने आप आयेंगे, जब तुम सही दिशा को पा लोगे, यदि दामन पकड़ना है तो कस कर के पकड़ो, उसमें ढील मत दो।

**एक प्रक्रिया मैंने प्रारम्भ कर दी है, एक धारा बहा दी है, और उस धारा से तुम्हारे भीतर हलचल भी पैदा हो गई है, इस हलचल को बढ़ाते हुए अब इस धारा में तुम्हें तीव्रगति से बहना है, और जब तुम बहना प्रारम्भ कर दोगे, तो गहरे पानी की फिक्र मत करना, मैं तुम्हें पार उतारूंगा ही, तुम्हें नवीन बनाऊंगा, पूर्ण बनाऊंगा, अपने आपको अलग बनाने हेतु आज से एक शुभारम्भ कर दो।** ●

## शिव कृपा सिद्धि कल्प

# श्रावण मास

## सर्व कामना सिद्धि अमृत महोत्सव है

**श्रा**वण मास भगवान भोलेनाथ, शिव का मास है, जिसमें सही पूजा साधना करने से भगवान शंकर सारी इच्छाओं को पूर्ण कर देते हैं, यदि जीवन में शिवत्व प्राप्त करना है, तो श्रावण मास से अधिक कोई भी सिद्ध मुहूर्त नहीं है, इस पुण्य मुहूर्त की प्रतीक्षा केवल साधु, योगियों को ही नहीं, हर साधक, स्त्री-पुरुष सबको रहती है, इसमास का आनन्द कुछ और ही है, अलमस्त फुहारों से भरा यह मास मन और शरीर के भीतर ही भीतर एक विशेष उत्साह, आवेग, चेतना जगाता है।

शिव की तो महिमा ही निराली है, प्रसन्न हुए तो कुबेर को देवताओं का कोषाध्यक्ष बना दिया, रावण की नगरी को सोने की बना दिया, अश्विनी कुमारों को सारी आयुर्वेद विद्या सौंप दी, महामृत्युंजय स्वरूप हो कर भीषण से भीषण रोग की शान्ति शिव कृपा साधना से ही प्राप्त होती है, जीवन में श्रेष्ठता शिवत्व के माध्यम से ही प्राप्त हो सकती है, श्रावण मास में सम्पन्न किया जाने वाला हर प्रयोग सौभाग्यदायक ही रहता है।

### श्रावण मास

श्रावण का महीना भगवान शिव को अत्यन्त प्रिय है, "शिव पुराण" में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि श्रावण का पहला दिन योगियों और गृहस्थों के सौभाग्य का द्वार खटखटाता है, और जो इस द्वार को खोल देता है, या दूसरे शब्दों में कहूं कि श्रावण महीने में जो विशिष्ट शिव साधना सम्पन्न कर लेता है, उसके भाग्य में लिखा हुआ दुर्भाग्य भी सौभाग्य में बदल जाता है, तब भगवान शिव की यह साधना उसकी दरिद्रता को मिटा कर सम्पन्नता की पंक्तियां लिख देती है, यदि जीवन में कर्जा है, व्यापार बाधाएं हैं, आर्थिक न्यूनता है, तो फिर श्रावण के इन प्रयोगों से बढ़ कर अन्य कोई साधना, अन्य कोई प्रयोग है ही नहीं, क्योंकि ये प्रयोग सरल हैं, अचूक हैं और अद्वितीय हैं।

### जहां शिव हैं वहां लक्ष्मी हैं

माता पार्वती, शक्ति स्वरूप जगदम्बा हैं, जो कि शिव का ही स्वरूप हैं, माता गौरी स्वयं अन्नपूर्णा, लक्ष्मी

स्वरूप हैं, शिव की पूजा-साधना करने से लक्ष्मी साधना का ही फल प्राप्त होता है, और सभी देवताओं में अग्र पूज्य गणपति तो साक्षात् शिव पुत्र हैं, जो सभी प्रकार के विघ्नों, अड़चनों, बाधाओं को समाप्त करने वाले देव हैं, श्रावण मास की साधना से गणपति साधना का भी साक्षात् फल प्राप्त होता है, इसीलिए कहा गया है, कि जहां शिव हैं, वहां सब कुछ है, और जिसने शिवत्व प्राप्त कर लिया, उसने अपने जीवन में पूर्णत्व प्राप्त कर लिया, उसके लिए कठिन से कठिन कार्य भी सरल बन जाता है।

इस वर्ष श्रावण मास **२७ जुलाई १९९१** से प्रारम्भ हो कर **२५ अगस्त १९९१** तक है, इसमें चार सोमवार आये हैं, और जैसा योग बना है, वह अमृतफलदायक है, सिंह राशि का शुक्र, गुरु-शुक्र की युति, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र चारों एक राशि में जो कि अद्‌भुत योग है, ऐसा सुन्दर श्रावण मास बहुत कम आता है, योग अनुसार न तो अतिवृष्टि होगी और न ही अनावृष्टि, इस श्रावण मास के चारों सोमवार दिव्य हैं, और हर साधक इसमें अपने जीवन के लिए कुछ अवश्य करें।

इस बार श्रावण मास में जो सोमवार हैं, उनसे सम्बन्धित तारीखें इस प्रकार है—

१—२९-७-९१
२—५-८-९१
३—१२-८-९१
४—१९-८-९१

इस प्रकार उपरोक्त तारीखों में जो सोमवार आ रहे हैं, उनमें प्रत्येक सोमवार को अलग-अलग प्रकार से साधना सम्पन्न करनी है, पूरे मास प्रतिदिन शिव मन्त्र का जप अवश्य करते रहें।

## चार सोमवार : चार भाग्योदयकारक दिवस

संवत् २०४८ के श्रावण मास के ये चारों सोमवार विशेष योगों से सम्पन्न हैं, प्रत्येक सोमवार अपना अलग प्रभाव लिये हुए है, उसी के अनुसार साधना प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

### (क) पहिला सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष ३, सोमवार दिनांक २९ जुलाई १९९१ को शतभिषा नक्षत्र एवं 'सौभाग्य योग' से सम्पन्न यह सोमवार अद्‌भुत है, और सौभाग्य का तात्पर्य ही लक्ष्मी आराधना एवं परिपूर्णता है, ऐसे योग में निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु साधना प्रयोग सम्पन्न किया जाना चाहिए।

१-लक्ष्मी प्राप्ति के लिए और लक्ष्मी को घर में स्थायित्व देने के लिए, २-व्यापार वृद्धि एवं व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए, ३-ऋण समाप्त होने एवं निरन्तर आर्थिक उन्नति के लिये, ४-जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण भौतिक सुख सम्पन्नता एव सफलता के लिये, ५-नौकरी लगने, बेकारी दूर होने व नौकरी में प्रमोशन के लिए, ६-स्वयं का वाहन होने व वाहन प्राप्ति के लिए, ७-आकस्मिक धन प्राप्ति, भूमि से द्रव्य लाभ, लॉटरी आदि से उत्तम योग के लिए, ८-आर्थिक दृष्टि से पूर्ण अनुकूलता और सफलता प्राप्ति के लिए।

### (ख) दूसरा सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष १०, सोमवार दिनांक ५ अगस्त ९१ को कृतिका नक्षत्र, वृषभ का चन्द्रमा, के संयोग से जो 'सर्वार्थ सिद्धि कामना पूर्ति योग' बना है, उससे इस शुभ अवसर पर, इस सोमवार को निम्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु साधना प्रयोग सम्पन्न किया जाना चाहिए।

१-पारिवारिक कलह दूर करने व गृहस्थ जीवन में पूर्ण अनुकूलता के लिए, २-घर के पितृ दोष, गृह दोष, तांत्रिक दोष, आदि समाप्त करने के लिए, ३-किसी भी प्रकार की साधना में पूर्ण सिद्धि प्राप्ति करने के लिए, ४-आश्चर्यजनक भाग्योदय प्राप्ति के लिए, ५-भगवान शिव को प्रत्यक्ष कर उनके दर्शन करने एवं शिवमय होने के लिए, ६-मनोवांछित पति या पत्नी प्राप्ति के लिए या इच्छित प्रेमी अथवा प्रेमिका को वश में करने के लिए।

## (ग) तीसरा सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष ३, सोमवार दिनांक १२-८-८१ को 'मधुश्रवा जयन्ती' 'स्वर्ण गौरी दिवस' है, यह सोमवार तो अद्भुत ही है, शुष्क जीवन में सम्पूर्ण रस वर्षा के लिए इस दिवस की साधना निष्फल जा ही नहीं सकती, ऐसे सिद्धिकारक दिवस को भगवान शिव की साधना-उपासना करने वाला साधक धन्य-धन्य हो जाता है, निम्न कार्यों की पूर्ति हेतु इस सोमवार को प्रयोग किया जाना चाहिए—

१-अखण्ड सौभाग्य प्राप्ति एवं पति या पत्नी की पूर्ण आयु के लिए, २-सन्तान प्राप्ति एवं पुत्र-सन्तान के लिए, ३-पौत्र प्राप्ति एवं उनकी दीर्घायु के लिए, ४-सन्तान सुरक्षा, उनकी सफलता एवं पुत्र की उन्नति के लिए, ५-कन्या के शीघ्र विवाह और उसके योग्य वर प्राप्ति के लिए, ६-प्रत्येक प्रकार की मनोकामना पूर्ति के लिए, ७-पूर्ण सौन्दर्य एवं यौवन प्राप्ति के लिए।

**इस महत्वपूर्ण सोमवार को किसी भी दृष्टि से निष्फल न जाने दें, और पति-पत्नी दोनों साथ बैठ कर साधना सम्पन्न करें।**

## (घ) चौथा सोमवार

शरद ऋतु के प्रारम्भ का दिवस "पद्म योग" ज्येष्ठा नक्षत्र से सिद्ध यह प्रबल सोमवार कालजयी शिव का सिद्धि दिवस है, श्रावण शुक्ल पक्ष १० सोमवार दिनांक १९-८-८१ को आ रहा है, यह सोमवार साधक को काल पर भी विजय दिलाने में सिद्ध हो सकता है, क्योंकि शिव ही महामृत्युंजय, कालजयी, महादेव हैं, जिनके एक आशीर्वाद से सारी बाधाओं का नाश हो सकता है।

निम्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु इस सोमवार को प्रयोग सम्पन्न किये जाने चाहिए—

१-शत्रुओं के नाश के लिए, २-शत्रुओं पर हावी होने व शत्रुओं को परास्त करने के लिए, ३-मुकदमे में पूर्ण सफलता प्राप्ति के लिए, शीघ्रातिशीघ्र फैसले के लिए, ४-किसी भी प्रकार की राज्य बाधा, राज्य संकट आदि की समाप्ति के लिए, ५-भविष्य में किसी भी प्रकार की अड़चन, बाधा, अपमान—भय आदि की निवृत्ति के लिए, ६-पूर्ण रोग मुक्ति एवं पारिवारिक सुख समृद्धि के लिए।

**इस प्रकार चारों सोमवार, जो मनोकामना सिद्धि मास में निहित हैं, उनका विधि-विधान सहित पूजन कर साधक अपना जीवन ही बदल सकता है।**

## मनोकामना सिद्धि साधना—श्रावण साधना

चारों सोमवार को अलग-अलग प्रयोग सम्पन्न किया जाना आवश्यक है, और इस साधना सामग्री में निम्न ग्यारह दुर्लभ वस्तुएं आवश्यक हैं—

**१-अद्वितीय सर्व कामना पूर्ति शिव यन्त्र, २-अन्नपूर्णा साफल्य सिद्धि यन्त्र, ३-पूर्ण सिद्धियुक्त शिवखप्पर यन्त्र, ४-वरदायक शिव का प्रामाणिक चित्र, ५-सिद्धि प्राप्ति युक्त गोमती चक्र, ६-साफल्य शिव रुद्राक्ष, ७-महत्वपूर्ण रुद्राक्ष माला, ८-कल्पवृक्ष लक्ष्मी वरद, ९-सर्वकामना सिद्धि यन्त्र, १०-सिद्धि प्राप्ति हेतु दुर्लभ पारद गुटिका, ११-ऋद्धि-सिद्धि युक्त दुर्लभ हकीक, १२-महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती त्रिशक्ति यन्त्र।**

साधकों के पत्र आ रहे हैं कि श्रावण मास की साधना से सम्बन्धित सभी सामग्री एक ही पैकेट में भेज दी जाय, जिससे कि उन्हें सुविधा रहे और प्रामाणिक सामग्री प्राप्त हो सके, इस हेतु—**"श्रावण मास—सर्व कामना सिद्धि पैकेट"** पत्रिका सदस्यों की सुविधा हेतु बनाये गये हैं, अतः साधक पत्रिका प्राप्त होते ही तत्काल सूचित कर दें, जिससे उचित समय पर उन्हें यह पैकेट भेजा जा सके।

इसके अतिरिक्त पूजन हेतु कुछ और सामग्री की आवश्यकता होती है, जिसकी व्यवस्था साधक को पहले से ही कर लेनी चाहिए—

१-आसन (किसी भी रंग का हो), २-जल पात्र, ३-गंगाजल (यदि हो तो), ४-चांदी या स्टील की प्लेट, ५-कुंकुम (रोली), ६-चावल, ७-केसर, ८-पुष्प, ९-बिल्व-पत्र, १०-पुष्प माला, ११-दूध, दही, घी, चीनी, शहद (अनुमान से), १२-नारियल, १३-रक्त सूत्र (मौली या कलावा), १४-यज्ञोपवीत, १५-अबीर-गुलाल, १६-अगर-बत्ती, १७-कपूर, १८-घी का दीपक, १९-नैवेद्य हेतु दूध का प्रसाद, २०-पांच फल, २१-इलायची।

## साधना प्रयोग

सर्वप्रथम स्नान कर शुद्ध सफेद धोती पहन कर पूर्व की ओर मुंह कर आसन पर बैठ जांय और अपने बाएं हाथ में जल ले कर दाएं हाथ से शरीर शुद्धि की प्रार्थना करते हुए जल छिड़कें, फिर सामने रखे कलश को चावल की ढेरी पर स्थापित कर उसके चारों ओर कुंकुम या केसर की चार बिन्दियां लगा दें, यह घट स्थापन सभी तीर्थों का प्रतीक है, तत्पश्चात् कलश में से थोड़ा सा जल अपने हाथ में ले कर संकल्प करें—

"मैं (अपना नाम, गोत्र तथा शहर का नाम लें) अपने गुरु को साक्षी रखते हुए, अपनी समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु श्रावण मास साधना सम्पन्न कर रहा हूं, भगवान शिव मेरा पूजन सफल करें।"

इसमें जिन-जिन कार्यों की पूर्ति का विवरण दिया हो या आपकी जो भी इच्छा है, उसका उच्चारण कर सकते हैं, या मन में बोल सकते हैं।

## गणेश पूजन

फिर सामने स्टील या चांदी की प्लेट में कुंकुम से स्वास्तिक बना कर गणपति को स्थापित करें, यदि गणपति मूर्ति नहीं हो तो एक सुपारी रख कर उसे गणपति मान कर उस पर जल चढ़ा कर पोंछ कर, केसर लगा कर, सामने नैवेद्य और फल रख दें, ऊपर पुष्प चढ़ावें और फिर हाथ जोड़ कर गणपति का ऋद्धि-सिद्धि सहित आह्वान करें, और एक माला "गं गणपतये नमः" मन्त्र का जप करें।

फिर गणपति को किसी अलग स्थान पर स्थापित कर दें और सामने पात्र में "सर्व काम्य सिद्धि पैकेट" में से **'सर्व काम्य सिद्धि यन्त्र'** को स्थापित करें, इससे पहले ही कामेश्वर शिव के प्रामाणिक चित्र को फ्रेम में मढ़वा कर रख देना चाहिए, और उसे जल से धो कर पोंछ कर, केसर लगा कर पुष्प माला पहना देनी चाहिए।

पात्र में सर्व काम्य सिद्धि यन्त्र के साथ-साथ-**'साफल्य प्राप्ति रुद्राक्ष'** **'कल्पवृक्ष वरद'** **'सिद्धि प्राप्ति युक्त गोमती चक्र'** **'ऋद्धि-सिद्धि यन्त्र'** तथा **'सर्व काम्य सिद्धि विग्रह'** को भी रख देना चाहिए।

फिर शुद्ध जल में थोड़ा सा कच्चा दूध और गंगाजल मिलाकर 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का उच्चारण करते हुए इन सब पर जल चढ़ावें, पतली-पतली धार से लगभग पांच मिनट तक चढ़ाते रहें, साथ ही दूध, दही, घी, शहद, शक्कर, पंचामृत से भी स्नान करावें, फिर शुद्ध जल से धो लें, फिर इन सभी विग्रहों को बाहर निकाल कर शुद्ध वस्त्रों से पोंछ लें और अलग पात्र में स्थापित कर लें, तत्पश्चात् इन सभी विग्रहों पर निम्न मन्त्र पढ़ते हुये केशर और कुंकुम लगावें।

नमस्सुगन्धदेहाय ह्यवन्ध्यफलदायिने।
तुभ्य गन्धन् प्रदास्याभि चान्धकासुरभन्जन॥

फिर इन सभी पर धीरे-धीरे पुष्प की पंखुड़ियां डालते हुए 'ॐ नमः शिवाय' शिव मन्त्र का जप करते हुए इन्हें सिद्धि युक्त बनावें।

(शेष भाग पृष्ठ संख्या ३८ पर देखें)

# जीवन का नवीन निर्माण करना है

# तो

# कामाख्या तंत्र साधना

# सम्पन्न कीजिये

## शक्ति का साक्षात् लौकिक स्वरूप सिद्धि, इसी साधना से संभव है

कामाख्या साधना गुह्यतम साधना मानी गई है, इसकी सर्वोच्चता को प्राचीन काल से ऋषियों, मुनियों, योगियों, तांत्रिकों, साधकों ने मानी है, गृहस्थ तो क्या संन्यासी भी इस साधना को पूर्ण कर अपना जीवन धन्य समझते हैं, कामाख्या देवी निर्माण की मूल देवी है जिसमें शिव का शिवत्व, विष्णु का विष्णुत्व, चन्द्रमा का चन्द्रत्व, तथा सभी देवताओं का देवत्व समाहित है, साधकों के लिये पूज्य गुरुदेव के अमृत वचनों से सिंचित यह अनमोल उपहार, जो निश्चय ही प्रत्येक गृहस्थ, प्रत्येक पुरुष तथा स्त्री सम्पन्न कर अपने जीवन को नयी निर्माण प्रक्रिया दें।

कामाख्या देवी के सम्बन्ध में सामान्य रूप से साधकों के मन में बड़ी भ्रान्ति बनी हुई है, आद्या शक्ति देवी के इस स्वरूप की साधना के सम्बन्ध में न तो किसी प्रकार का स्पष्ट विधान पाठकों के समक्ष है और न ही इस सम्बन्ध में भ्रान्तियों का निराकरण स्पष्ट रूप से किया गया है, इस साधना को तन्त्र साधना का विशेष गुह्यतम रूप बता कर तन्त्र, मन्त्र के ज्ञाताओं ने साधकों को दूर रखने का ही प्रयास किया है, ऐसा क्यों? आद्या शक्ति देवी के इस स्वरूप को क्यों छिपाया गया?

### कामाख्या देवी : पौराणिक कथा

पौराणिक मान्यता के अनुसार—भगवान विष्णु द्वारा सुदर्शन चक्र से सती की मृत देह को काट-काट कर जिन ५१

स्थानों पर गिराया गया वहां-वहां एक-एक शक्ति पीठ बन गया, इस मान्यता में सत्यता है कि ये ५१ स्थान शक्ति के स्रोत बिन्दु हैं, इन स्थानों पर जब साधक शुद्ध मन से, भक्ति भाव से जाता है, तो उसे अपने आप एक रहस्यमय शक्ति का आभास होने लगता है, अपने शरीर में एक तीव्र ऊर्जा सी बहने लगती है, स्थान का प्रभाव साधक को साधना के प्रति जाग्रत करता है, वर्तमान समय के आसाम प्रदेश में ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर गोहाटी के कामगिरि पर्वत पर भगवती आद्या शक्ति कामाख्या देवी का पावन शक्ति पीठ है, यहां पर देवी का गुप्तांग गिरने से इस शक्ति पीठ को "योनि शक्ति पीठ" कहा गया है।

यह तो पौराणिक कथा है, वास्तविक स्थिति यह है कि यह शक्ति पीठ जीवन की मूल शक्ति-काम शक्ति, निर्माण शक्ति का पीठ है, और कामाख्या शक्ति काम-रूपिणि महाशक्ति है, ब्रह्मा का ब्रह्मत्व, विष्णु का विष्णुत्व, शिव का शिवत्व, चन्द्रमा का चन्द्रत्व और समस्त देवताओं का देवत्व इसी कामाख्या शक्ति में निहित है, शक्ति का शुद्ध लौकिक सांसारिक स्वरूप "कामाख्या" ही है।

## कामाख्या शक्ति स्वरूप

कामाख्या देवी वरदायिनी, महामाया, नित्यस्वरूपा, आनन्ददात्री, देवी शक्ति है, "गुप्त तन्त्र" में लिखा है कि—कामाख्या ही सर्वविद्या स्वरूपिणी, सर्वसिद्धिप्रदात्री शक्ति है और जो कामाख्या के प्रति उदासीन रहता है उपेक्षा करता है, उसे कभी जीवन में आनन्द, सुख, सौभाग्य तथा सिद्धि प्राप्त नहीं हो पाती, कामाख्या चिन्ता मुक्त करने वाली, जीवन में धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष सभी स्वरूपों को पूर्ण रूप से प्रदान करने वाली देवी है।

"कौलकल्पतरु" में लिखा है, कि—कामाख्या साधना से मनुष्य तो क्या देव, दानव, गन्धर्व, किन्नर भी वश में हो जाते हैं।

"महेश्वरी तन्त्र" जो कि तन्त्र साहित्य में भगवान शिव द्वारा स्वरचित ग्रन्थ माना जाता है, लिखा है कि—
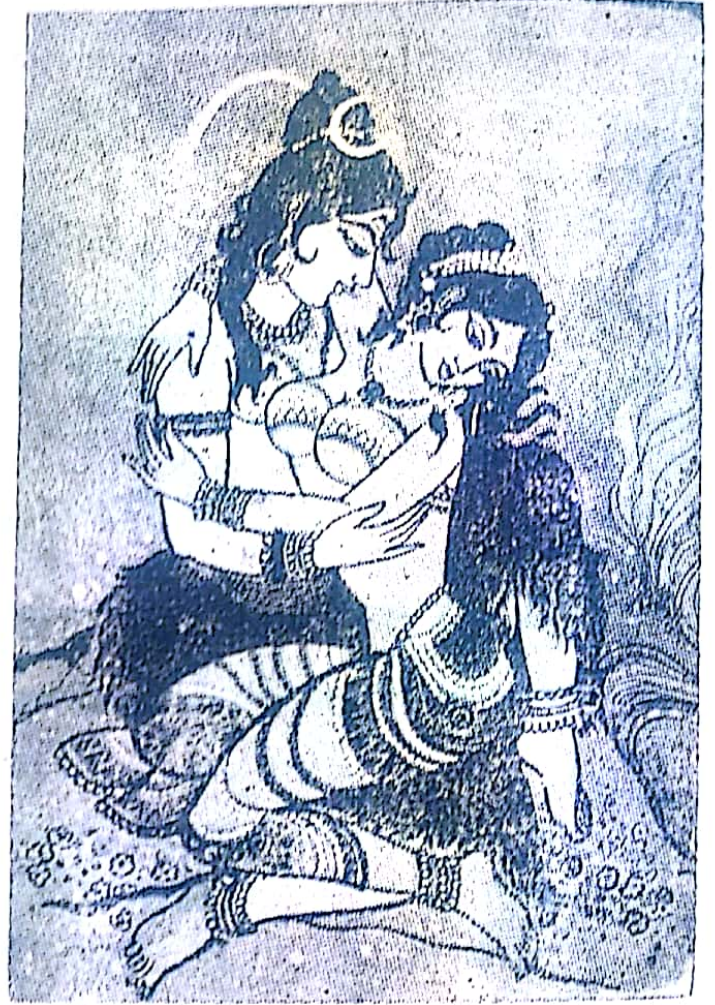
मन्त्रस्य पुरतो देवि ! राजानं सचिवादयः।
अन्ये च मानवाः सर्वे मेषादि जन्वो यथा ॥
मोहयेन्नगरं राज्ञः स हस्त्यश्व रथादिकम्।
उर्वश्याद्यास्तु स्वर्वेश्या राज पत्न्यादिकाः क्षणात् ॥
स्तम्भनं मोहनं देवि ! क्षोभणं जृम्भणं तथा।
द्रावणं भीषणं चैव विद्वेषोच्चाटने तथा ॥
आकर्षणं च नारीणां विशेषेण महेश्वरि।
वशीकरणमन्यानि साधयेत् साधकोत्तमः ॥

अर्थात् कामाख्या मन्त्र साधना के सामने राजा, मंत्री, तथा अन्य सभी मनुष्य साधक के सामने भेड़ के समान वशीभूत हो जाते हैं, उच्च व्यक्ति तो क्या स्वर्ग की अप्सराएं भी कामाख्या साधना से वशीभूत हो जाती हैं, यह साधना स्तम्भन, मोहन, द्रावण, त्रासन, विद्वेषण, उच्चाटन, तथा पूर्ण वशीकरण करने में समर्थ है,

इसके प्रभाव से अग्नि, सूर्य, वायु और जल राशि सभी को स्तम्भित कर देने की शक्ति साधक में आ जाती है।

'मोहिनी तन्त्र' में लिखा है, कि कामाख्या मन्त्र का ज्ञाता कामदेव के समान हो जाता है, उसके लिए किसी को भी वशीकरण करना असाध्य नहीं रहता, और सबसे बड़ी बात यह है कि इस साधना में किसी प्रकार की हानि नहीं होती, अपितु सिद्धि की ओर ही वृद्धि होती है।

## कामेश्वरी शक्ति : कामाख्या साधना

कामाख्या शक्ति साधना जीवन की रस साधना है, शरीर साधना है, लौकिक साधना है, जो जीवन में रसतत्व को हटा कर केवल मोक्ष भाव से साधना करते है, उन्हें जीवन में कभी सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती, जीवन सम्पूर्ण रूप से जीने की साधना कामाख्या साधना है, जिसमें साधक को अपने जीवन का पूर्ण आनन्द प्राप्त होता है, उसकी इच्छाओं की पूर्ति पूर्ण रूप से सहज संभव हो पाती है।

## कामाख्या साधना कौन करें ?

- प्रत्येक विवाहित अथवा अविवाहित, पुरुष या स्त्री, दोनों को ही कामाख्या साधना जीवन में पूर्ण शारीरिक सुख प्राप्त करने हेतु अवश्य करनी चाहिए।
- जो भी साधक अपनी शारीरिक तथा मानसिक शक्तियों का पूर्ण विकास चाहता है, उसे कामाख्या शक्ति साधना अवश्य करनी चाहिए।
- अपनी इच्छानुसार जीवन में सहयोग चाहे वह मित्रों का हो, स्त्री का हो, अथवा अन्य व्यक्तियों का, इस सहयोग को पूर्ण रूप से प्राप्त करने के इच्छुक साधक को यह साधना करनी चाहिए।
- अपने आपको कामदेव के समान तीव्र वशीकरण युक्त बनाने हेतु, जिससे जो भी प्रभाव में आये वह पूर्ण रूप से वशीभूत हो जाय, उस हेतु यह साधना अवश्य करनी चाहिए।
- शारीरिक दृष्टि से कोई कमी हो, कोई विकृति हो, कोई बाधा हो, उसे दूर करने हेतु यह साधना अवश्य करनी चाहिए।
- यह साधना धन-धान्य, तथा पुत्र प्रदायक साधना है और दरिद्रता का सम्पूर्ण रूप से नाश होता है, इसमें कोई संदेह नहीं।
- इच्छा शक्ति, काम शक्ति, ज्ञान शक्ति तीनों में पूर्णता की साधना कामाख्या साधना ही है, जो सहज ही सिद्ध हो जाती है।
- कामाख्या साधना करने वाले साधक का लक्ष्मी स्वयं वरण करती है और सरस्वती उसके मुख में निवास करती है, ऐसा शास्त्रोक्त कथन है।

## साधना कब करें ?

जैसा कि मैंने ऊपर स्पष्ट किया है, कि कामाख्या साधना ही जीवन की वास्तविक साधना है, लौकिक रूप से अर्थात् जीवन में पूर्णता प्राप्त करने वाला ही अपना पारलौकिक जीवन प्राप्त कर सकता है, यदि इच्छाएं अधूरी रहती हैं, तो मनुष्य को विकृत योनियों में आना पड़ता है, ये भूत, प्रेत, पिशाच इत्यादि अधूरे जीवन जिये प्राणी ही हैं।

**यह साधना मूलरूप से रात्रि साधना है, और किसी भी बुधवार की रात्रि को प्रारम्भ कर तीन बुधवार की पूर्णता तक अर्थात् २१ दिन का प्रयोग सम्पन्न किया जाता है, तीनों बुधवारों को विशेष पूजन का विधान है।**

## साधना विधान–कामाख्या तन्त्र

इस साधना हेतु साधक विशेष सामग्री व्यवस्था पहले से ही कर लें, साधना सामग्री में कुंकुंम, लाल पुष्प, कनेर के पुष्प, सिन्दूर, पचगव्य, पीला वस्त्र, मौली (कलावा) प्रमुख है।

साधना हेतु मूलरूप से मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **कामाक्षी यन्त्र, काम रूप गुटिका,** तथा **सोलह कामवज्र** आवश्यक हैं।

बुधवार के दिन रात्रि को साधक स्नान कर, शुद्ध पीली धोती पहने और बिना किसी से बातचीत किये सीधे अपने पूजा स्थान में प्रविष्ट हो कर अपना आसन ग्रहण करें, सर्वप्रथम गुरु का ध्यान करें, और गुरु पूजन प्रारम्भ करें, गुरु पूजन कर एक माला गुरु-मन्त्र का जप करें, इससे साधना काल में किसी प्रकार का विघ्न उपस्थित नहीं होता है, साधक अपनी साधना पूर्ण शक्ति के साथ सम्पन्न कर सकता है।

अब अपने सामने लकड़ी के पीढ़े पर पीला वस्त्र बिछा कर इस वस्त्र को मौली बांध दें, इस वस्त्र पर कामाक्षी यन्त्र स्थापित करें, इस यन्त्र के सामने सिन्दूर से एक गोला (वृत्त) बनाएं और इसके मध्य में एक त्रिकोण बना कर सिन्दूर से ही **"श्रीं श्रीं श्रीं"** लिखें, और इसके नीचे अपने नाम का पहला अक्षर लिखें, गोले के बाहर आठ दिशाओं में सोलह चावल की ढेरियां बना कर उस पर कामबज (कामबीज) स्थापित करें, ये सोलह बीज कामाख्या की सोलह शक्तियों के पीठ हैं, एक ओर दीपक अवश्य ही जला दें, अब देवी का ध्यान करें—

हे कामाख्या देवी ! आप सरस्वती तथा लक्ष्मी से युक्त हैं, शिवमोहिनी हैं, सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्रदायनी हैं, डाकिनी, योगिनी, विद्याधरी, आदि समूह आपके आधीन हैं, सम्मोहन प्रदात्री, पुष्प धनुष-धारिणी, महामाया देवी मेरी पूजा (अपना नाम लें) स्वीकार करें।

अब यन्त्र पूजा में सर्वप्रथम कुंकुम चढ़ाएं फिर सिन्दूर और सुगन्धित लाल पुष्प चढ़ाएं, अब देवी को जल का अर्घ्य अर्पित करें तथा प्रसाद हेतु खीर का पात्र सामने रखें, अब देवी के मूल मन्त्र की पांच माला का जप करें।

### कामाख्या मन्त्र

त्रीं त्रीं त्रीं हूं हूं स्त्रीं स्त्रीं कामाख्ये ! प्रसीद स्त्रीं स्त्रीं हूं हूं त्रीं त्रीं त्रीं स्वाहा ॥

यह मन्त्र नहीं, सभी तन्त्रों का सार है, इसीलिए इसे अत्यन्त दुर्लभ मन्त्र कहा जाता है, जिसके जप से सम्पूर्ण सिद्धियां प्राप्त हो कर तेजस्वी व्यक्तित्व बनता है, इस प्रकार पांच माला मन्त्र जप के पश्चात् इन्द्र की पूजा करें, और फिर सोलह पुष्प ले कर कामाख्या देवी की सोलह शक्तियों का पूजन करें, और प्रत्येक कामबीज पर शक्ति का नाम लेते हुए, ध्यान कर पुष्प अर्पित करें, ये सोलह शक्तियां हैं—

अन्नदा, धनदा, सुखदा, जयदा, रसदा, मोहदा, ऋद्धिदा, सिद्धिदा, वृद्धिका, शुद्धिदा, भुक्तिदा, मुक्तिदा, मोक्षदा, शुभदा, ज्ञानदा, कान्तिदा।

कामाख्या का पूजा विधान इन्हीं शक्तियों की पूजा से सम्पन्न होता है, अब साधक पुनः पांच माला मन्त्र जप कर कामाख्या देवी को पुष्पांजलि अर्पित करें और यदि किसी विशेष इच्छा, कामना पूर्ति हेतु पूजा करता है, तो एक माला अतिरिक्त मन्त्र जप अवश्य करें।

पूर्ण पूजन के पश्चात् साधक पूरी रात्रि सभी सामग्री पूजा स्थान में ही रहने दें, खीर का प्रसाद अवश्य ग्रहण कर लें, दूसरे दिन प्रातः स्नान कर अपने पूजा स्थान में प्रवेश कर यन्त्र को तो पूजा स्थान में ही स्थापित करें, और कामरूप गुटिका को अपनी बांह पर बांध लें, स्त्रियां इसे काले धागे से अपनी कमर में बांधें।

प्रतिदिन एक माला मन्त्र जप अवश्य सम्पन्न करें, तथा अगले बुधवार को पुनः पूरा पूजा विधान सम्पन्न करें, इस हेतु साधक सभी सामग्री को सभाल कर रखें।

कामाख्या साधना जीवन की वह साधना है, जिससे साधक जीवन में सम्पूर्ण रस, आनन्द, प्राप्त कर सकता है, अपने जीवन की कमियों को दूर कर सकता है।

साधक में कामदेव स्वयं समाहित हो जाते हैं, जिससे साधक को वशीकरण शक्ति प्राप्त हो जाती है, और वह सबका प्रिय बन जाता है, जीवन के भोग-विलास उसे पूर्ण रूप से प्राप्त होते हैं।

'कामाख्या तन्त्र' में लिखा है, कि **गृहस्थ धर्म, गृहस्थ व्यक्ति के लिए कामाख्या ही एक मात्र वरदायिनी अभीष्ट फलदात्री, सर्व विद्या स्वरूपिणी तथा सर्व सिद्धि-दायिनी है, जो साधक कामाख्या के प्रति उदासीन रहता है, उसे जीवन में सुख प्राप्त हो ही नहीं सकता है।**

### जब बार-बार बाधाएं सताएं
### तो निश्चित समझिये कि आप पर है– शनि-दोष

## शनि-दोष शमन का अचूक कालदंष्ट प्रयोग

# हरियाली शनैश्चरी अमावस्या

## ऐसा विशिष्ट मुहूर्त जो वर्षों बाद आया है

**कि**सी भी व्यक्ति का ग्रहों के प्रभाव से निर्बल समय और श्रेष्ठ समय आता है, उसमें ग्रहों का आपसी सम्बन्ध, ग्रहों की स्थिति, जन्मकुण्डली में स्थित ग्रह, ग्रहों की दशा इत्यादि सबका पारस्परिक समन्वय रहता है, श्रेष्ठ ज्योतिषी वही है जो प्रत्येक ग्रह पर अलग-अलग विचार न कर पूरी जन्मकुण्डली, दशा, भाव, दृष्टि, पर विचार करे और इसके साथ-साथ गोचर का भी ध्यान पूरा रखे, गोचर का तात्पर्य है, वर्तमान समय में आकाशीय मण्डल में ग्रह किस प्रकार भ्रमण कर रहे हैं, और व्यक्ति पर इसका क्या प्रभाव पड़ रहा है, आधी अधूरी गणनाएं कर भविष्य कथन करना व्यक्ति के मन में निराशा की भावना ही जाग्रत करना है, जब कि एक श्रेष्ठ ज्योतिषी का कार्य व्यक्ति को उसके अच्छे समय और बुरे समय दोनों को ही पूर्ण रूप से विवेचन कर स्पष्ट करना है, जिससे वह अपने आपको उसके अनुरूप तैयार कर सके, अपने कार्यों को गति दे सके।

### शनि ग्रह

शनि देव के सम्बन्ध में जितनी अधिक भ्रान्तियां फैली हुई हैं, उतनी किसी अन्य ग्रह के सम्बन्ध में नहीं हैं, यदि किसी व्यक्ति का समय खराब चल रहा है, निरन्तर बाधाएं आ रही हैं तो यही कहते हैं, कि "क्या बात है भाई! तुम्हें क्या शनि लग गया है", शनि का प्रभाव हर समय विपरीत ही हो, ऐसी बात नहीं है, मैंने हजारों ऐसी जन्मपत्रियों का अध्ययन किया है जो शनि की दशा में शनि के प्रभाव स्वरूप जीवन में अत्यन्त उच्च स्थिति पर पहुंचे हैं, शत्रुओं पर हमेशा विजय प्राप्त की है, बाधाएं उनके जीवन में टिकती ही नहीं हैं और ऐसे व्यक्तियों को भी देखा है, जो शनि के दुष्प्रभाव से थोड़े ही समय में

करोड़पति से कंगाल हो गये, मान प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल गई, वंश का वंश ही समाप्त हो गया, ये दोनों ही स्थितियां हैं क्योंकि शनि के सम्बन्ध में यह निश्चित स्थिति है कि यह ग्रह अपना प्रभाव चरम रूप में ही देता है अर्थात् इस पार या उस पार, या तो व्यक्ति को आकाश की ऊंचाइयों तक पहुंचा देता है अथवा अपमान, पीड़ा, बाधा, हानि के गहरे अन्धकार में धकेल देता है।

## शनि ग्रह : ज्योतिषीय विवेचन

शनि ग्रह—आयु, जीवन, मृत्यु, विपत्ति, कष्ट, रोग, दरिद्रता, पारिवारिक कलह, कृष्ण वर्ण, यौन दुर्बलता, जेल यात्रा, आकस्मिक हानि का कारक ग्रह है, कार्य की दृष्टि से यह कोयला, बिजली, चमड़ा, पत्थर, मशीनरी, पेट्रोल, काले रंग की वस्तुएं, तेल, तिल या तिल से बनी वस्तुएं, अस्त्र-शस्त्र, कृषि का कारक ग्रह है।

**जन्मकुण्डली में जिस स्थान पर यह स्थित होता है, उससे तीसरे, सातवें और दसवें भाव पर इसकी सम्पूर्ण दृष्टि रहती है, अपने भाव के अलावा इन तीनों भावों को पूर्ण रूप से प्रभावित करता है।**

शनि तुला राशि का उच्च और मेष राशि का नीच माना जाता है, इसकी दृष्टि तीक्ष्ण तथा तात्कालिक होती है, शनि के मित्र ग्रह-राहु तथा केतु, सामान्य भाव ग्रह-मंगल तथा शुक्र हैं और सूर्य तथा चन्द्रमा शत्रु ग्रह हैं।

शनि एक राशि पर ३० महीने रहता है, और इस प्रकार तीस वर्ष में सभी राशियों पर भ्रमण करता है।

## शनि के सम्बन्ध में पौराणिक कथा

शनि सूर्य पुत्र है और मूलरूप से क्रूर ग्रह माना गया है, किसी विशेष घटनावश शनि पत्नी ने श्राप दिया कि जिसे भी तुम देख लोगे वह पूर्ण रूप से नष्ट हो जायेगा, इस कारण शनि हमेशा सिर नीचा किये ही रहने लगे क्योंकि इनकी दृष्टि अत्यन्त प्रभावकारी है, यदि शनि रोहिणी नक्षत्र का भेदन कर आता है, तो अकाल की स्थिति बन जाती है, शनि देव ने ही अपने इस दुष्प्रभाव को दूर करने का उपाय महाराज दशरथ को बताया था उसके अनुसार यदि किसी व्यक्ति की कुण्डली या गोचर में, लग्न में, चतुर्थ स्थान में अथवा मृत्यु भाव में शनि होगा, तो उस व्यक्ति को शनि के प्रभाव से अपने जीवन में पीड़ा, हानि, अपमान आकस्मिक मृत्यु प्राप्त हो सकती है, लेकिन यदि कोई पूर्ण विधि-विधान सहित शनि देव की पूजा सम्पन्न करता है, तो उस पर यह प्रभाव नहीं रहेगा।

शनि के प्रभाव के सम्बन्ध में कुछ भी निश्चित नहीं कहा जा सकता, क्योंकि यह भ्रमणशील ग्रह किस योग से अपना प्रभाव दे दे, अतः यह जरूरी नहीं कि शनि की महादशा में ही शनि प्रयोग करें, अथवा शनि की साढ़े साती में शनि शान्ति करें अथवा जन्मकुण्डली में शनि विपरीत स्थिति में हो तभी शनि पूजा सम्पन्न करें।

प्रत्येक व्यक्ति को शुभ मुहूर्त में शनि पूजा प्रारम्भ कर नियमित रूप से शनि ध्यान तथा शास्त्रोक्त पूजा अवश्य करनी चाहिए।

## हरियाली अमावस्या : शनि पूजा का विशिष्ट मुहूर्त

कुछ मुहूर्त ऐसे सिद्ध मुहूर्त होते हैं कि उस मुहूर्त में यदि कोई कार्य प्रारम्भ किया जाय तो तत्काल प्रभाव देखने को मिल जाता है, इस वर्ष हरियाली अमावस्या को अर्थात् १० अगस्त श्रावण कृष्ण पक्ष अमावस्या को एक अत्यन्त विशेष प्रबल मुहूर्त बन पड़ा है, विशेष बात यह है कि इस दिन शनिवार भी है और शनि मकर राशि में स्थित हो कर अत्यन्त तीव्र है, और ग्रह जब अपने पूर्ण प्रभाव में होता है तो उसकी साधना करने से तत्काल शान्ति प्राप्त होती है, ऐसा विशेष मुहूर्त कई वर्षों बाद आया है।

यदि साधक अपने जीवन में शनि के दुष्प्रभाव को पूर्ण रूप से शान्त कर देना चाहता है तो उसे इस विशेष मुहूर्त पर साधना कार्य अवश्य प्रारम्भ करना चाहिए।

अमावस्या अपने आपमें सिद्ध होती है, शनि का वर्ण भी कृष्ण और अमावस्या का रूप तो पूर्ण रूप से कृष्ण ही है, शनि के अधिदेवता काल अर्थात् यम है और प्रत्यधि देवता ब्रह्मा हैं, तथा अमावस्या को कालरात्रि कहा गया है, इस कारण यह मुहूर्त अत्यन्त सिद्ध मुहूर्त माना गया है।

रात्रि को सम्पन्न की जाने वाली इस साधना के कुछ विशेष नियम हैं, जिसका पूर्ण कड़ाई के साथ पालन किया जाना चाहिए।

- साधना एक बार प्रारम्भ करने के पश्चात् मन्त्र जप पूरा होने के बाद ही अपना आसन छोड़ें।
- साधक स्वयं काले वस्त्र धारण करें, और आसन भी ऊनी काले रंग का ही होना चहिए, सामने शनि देव प्रतिमा की स्थापना भी काला वस्त्र बिछा कर करें।
- शनि देव पश्चिम दिशा के स्वामी हैं, इस कारण साधक पश्चिम दिशा में स्थापना कर पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर साधना कार्य सम्पन्न करें।
- शनि देव आपके शत्रु नहीं हैं, इसलिए कभी भी मन में घृणा, वितृष्णा के भाव से साधना नहीं करनी चाहिए, पूर्ण भक्ति भाव से शनि देव की शान्ति और पूर्ण कृपा प्राप्त करने की इच्छा से साधना सम्पन्न करनी चाहिए, शनि देव की जिस साधक पर पूर्ण कृपा हो जाती है वह साक्षात् काल के समान अजेय, बलशाली, तीव्र व्यक्तित्व बन जाता है, बाधाओं पर इस प्रकार हावी रहता है कि उसे तीव्र उन्नति के मार्ग से कोई रोक नहीं सकता।
- मन्त्र जप मन ही मन सम्पन्न करना चाहिए, जोर-जोर से बोल कर शनि मन्त्र का जप करने से कोई प्रभाव प्राप्त नहीं होता है।

## साधना सामग्री

इस पीड़ानाशक, बाधा शान्ति की विशेष साधना हेतु मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **"शनि महायन्त्र"** **"शनि भार्या प्रतिमा"** तथा **"शनि मुद्रिका"** के अतिरिक्त **"शनैश्चरी माला"** जो 'रौद्रान्तक' शनि मन्त्रों से अभिमन्त्रित हो, आवश्यक है, इसके अतिरिक्त काले तिल और सरसों के साथ नैवेद्य हेतु गुड़ आवश्यक है।

## साधना प्रयोग

इस विशेष रात्रि को साधक स्नान कर काले वस्त्र धारण कर अपने सामने एक बाजौट (चौकी) पर पश्चिम दिशा में काला वस्त्र बिछा कर एक तिल की ढेरी पर शनि महायन्त्र स्थापित करें और फिर शनि देव का आह्वान कर उनका ध्यान करें—

नीलांजल समाभासं रविपुत्र यमाग्रजम्।
छाया मार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

अब यन्त्र के सामने गुड़ तथा तिल का भोग लगाएं और पूजा का दूसरा क्रम प्रारम्भ करें।

शनि का तीव्र प्रभाव शनि भार्या के कारण ही है, इस हेतु शनि पत्नी का पूजन भी साधक को अवश्य करना चाहिए, इस कारण तिल की एक ढेरी पर शनि यन्त्र के बाजू में शनि भार्या प्रतिमा स्थापित करनी चाहिए, और पांच बार नीचे लिखा शनि भार्या स्तोत्र का पाठ करना चाहिए—

### शनि भार्या स्तोत्र

ध्वजिनी धामिनी चैव कंकाली कलह-प्रिया
कलही कंटकी चापि अजा महिषी तुरंगमा।

नामानि शनि-भार्याः या नित्यं जपति यः पुमान्
तस्य दुःखानि नश्यन्ति सुखं सौभाग्य मेधते ।।

शनि के पूजन में मन्त्र जप आवश्यक है और इस हेतु साधक शनैश्चरी माला से शनि मन्त्र का जप प्रारम्भ करें, शनि मन्त्र की जप संख्या निश्चित होनी आवश्यक है, एक बार जो क्रम स्थापित करें उस क्रम का नियमित रूप से पालन अवश्य करें, मन्त्र जप प्रारम्भ करने से पहले मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त शनि मुद्रिका–शनि महायन्त्र तथा शनि भार्या प्रतिमा के मध्य में स्थापित करें इसे स्थापित करने हेतु एक छोटी कटोरी में तेल भरें और उस तेल में यह मुद्रिका डाल दें, अब इस मुद्रिका का प्रयोग आगे नियमित रूप से करना है।

**अमावस्या की रात्रि को शनि मन्त्र का जप प्रारम्भ करने से पहले यह मुद्रिका सात बार अपने सिर पर घुमा कर सामने रखी कटोरी में डाल दें, और एक चिमटी भर तिल कटोरी के तेल में डाल दें।**

## शनि बीज मन्त्र

।। ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

प्रथम दिन सात माला मन्त्र जप करना आवश्यक है, और एक माला मन्त्र जप होते ही, मुद्रिका को अपने सिर पर सात बार घुमाना है।

जब सात माला मन्त्र जप पूरा हो जाय तो अपने कार्यों की बाधा शान्ति, भय नाश, हेतु शनि देव से प्रार्थना करते हुए शनि स्तोत्र का पाठ करें, सामान्य रूप से साधक स्तोत्र का पाठ छोड़ देते हैं, जो कि उचित नहीं है।
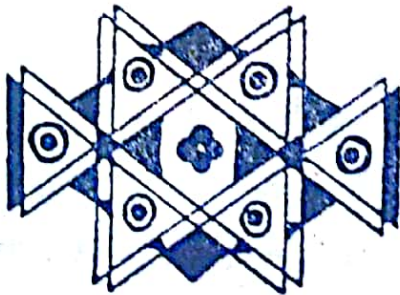
## शनि स्तोत्र

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च ।
नमः कालाग्निरूपाय कृतान्ताय च वै नमः ।।
नमो निर्मांसदेहाय दीर्घश्मश्रुजटाय च ।
नमो विशालनेत्राय शुष्कोदरभयाकृते ।।
नमस्ते कोटराक्षाय दुर्निरीक्ष्याय वै नमः ।
नमो घोराय रौद्राय भीषणाय कपालिने ।।
नमस्ते सर्वभक्षाय वलीमुख नमोऽस्तुते ।
सूर्यपुत्र नमस्तेऽस्तु भास्करे भयदाय च ।।
देवासुरमनुष्याश्च सिद्धविद्याधरोरगाः ।
त्वया विलोकिताः सर्वे नाशं यान्ति समूलतः ।।
प्रसादं करु मे देव वराहो हमुपागतः ।
एवं स्तुतस्तदा सौरिर्ग्रहराजो महाबलः ।।

यह स्तोत्र अचूक प्रभावकारी है, और यदि प्रतिदिन एक पाठ भी न कर सकें, तो प्रत्येक शनिवार को अवश्य ही स्तोत्र पाठ करें, शनि बाधा से पीड़ित व्यक्तियों के लिए आवश्यक है, कि वे प्रत्येक शनिवार को एक माला शनि बीज मन्त्र का जप और पांच बार शनि स्तोत्र का पाठ करें।

हरियाली अमावस्या के दिन सम्पूर्ण पूजन कर, शनि मुद्रिका अपने बांएं हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर लें तथा शनैश्चरी माला गले में धारण करें और अपनी सामर्थ्य के अनुसार शनि से सम्बन्धित वस्तुओं जैसे तिल, उड़द, लोहा, तेल, काला वस्त्र, जूते इत्यादि का दान अवश्य करें।

**शनि की अनुकूलता और शनि की सिद्धि साधक के जीवन में एक ऐसा प्रबल तत्व भर देती है, जिसके प्रभाव स्वरूप बड़ी से बड़ी बाधा भी उसके सामने टिक नहीं सकती, वह स्वयं काल के समान अजेय हो कर सम्पूर्ण आत्म विश्वास से विजय प्राप्त करता है, हर क्षेत्र में उसे सफलता प्राप्त होती है।**

# कहे गुरु गोरखनाथ

# जीवन जियो तो ऐसे जियो

# हर रंग निखर निखर जाये

# जीवन में सफलता के पांच सुगन्ध सूत्र

गुरु गोरखनाथ साबर तन्त्र के सर्वोच्च जानकार माने जाते हैं, गोरखनाथ शिव के पूर्ण सिद्ध उपासक थे और उन्होंने साबर साधनाओं से सम्बन्धित जो रचनाएं सिद्ध कीं, अपने शिष्यों को इस सम्बन्ध में जो ज्ञान दिया, वह आज भी हर कसौटी पर खरा उतरता है।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सिद्धि हेतु उन्होंने जो "मुद्रिका रहस्य" स्पष्ट किया वह तो अद्भुत ही है, आप भी परखें और अपने जीवन में उतारें।

हाथ को पूरे शरीर का प्रतिबिम्ब कहा जा सकता है, इस सम्बन्ध में जो अनुसंधान हो रहे हैं, उससे यही स्पष्ट हुआ है कि प्रत्येक उंगली के मूल में जो छोटी-छोटी नाड़ियां होती हैं, उनका सम्बन्ध सीधा मस्तिष्क से रहता है, अलग-अलग व्यक्तियों में कोई विशेष नाड़ी ज्यादा सक्रिय रहती है, और उसका प्रभाव उसके जीवन में पड़ता है, जैसे तर्जनी उंगली का सम्बन्ध राज्य उन्नति, लेखन, परीक्षा में सफलता, उन्नति आदि से रहता है, मध्यमा का सम्बन्ध आर्थिक आधार, व्यापार वृद्धि, भाग्योदय, शत्रु विजय, पराक्रम, व्यक्तित्व से रहता है, अनामिका का सम्बन्ध प्रेम, वैवाहिक जीवन, मधुरता, आकर्षण के साथ प्रसिद्धि, सम्मान और यश से रहता है, कनिष्ठिका का सम्बन्ध भावनाओं से है, और यह भोग विलास, ऐश्वर्य, आकर्षण, सम्मोहन से भी सम्बन्धित है।

## यन्त्र और उंगलियों का सम्बन्ध

गुरु गोरखनाथ ने स्पष्ट किया है कि उंगलियों में यदि कोई व्यक्ति यन्त्र धारण करता है तो उस यन्त्र के प्रभाव

नाड़ियों के माध्यम से मनुष्य चौबीस घंटे ग्रहण करता रहता है, उसका मस्तिष्क उस विशेष कार्य पूर्ति हेतु अत्यन्त सक्रिय हो जाता है।

**यन्त्र का महत्व तो प्राचीन ग्रन्थों ने भी पूर्णता के साथ स्वीकार किया है, "श्री यन्त्र" तो पूरे संसार में विख्यात है, और पश्चिम के वैज्ञानिकों ने एक स्वर से यह स्वीकार किया है, कि श्री यन्त्र अपने आप में जटिल विधि-विधान है, और इसमें आर्थिक उन्नति का प्रभाव उत्पन्न करने में विशेष महत्ता है, इसी प्रकार कुबेर यन्त्र, कनकधारा यन्त्र, शत्रु स्तम्भन यन्त्र आदि भी अपने आप में महत्वपूर्ण हैं और पिछले हजारों वर्षों से उच्च कोटि के राजा-महाराजा, राजकुमारियां इन अंगूठियों को धारण करती रही हैं, और अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करती रही हैं।**

इसके अलावा चौबीसा यन्त्र, छत्तीसा यन्त्र, आदि भी अत्यन्त महत्वपूर्ण माने गये हैं, श्रेष्ठ धातुओं पर इन यन्त्रों का अंकन एक विशेष मुहूर्त में सम्पन्न कर, इनको मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त किया जाता है, तभी इन यन्त्रों का प्रभाव अचूक होता है।

अनुभव में यह आया है, कि इस प्रकार के यन्त्रों से अंकित मुद्रिकाओं को धारण करते ही अनुकूल फल की प्राप्ति संभव होने लगती है, और यदि श्रद्धापूर्वक इन अंगूठियों को धारण किये रहें और अपवित्र न होने दें, तो कुछ ही दिनों में उसका पूर्ण अनुकूल फल प्राप्त हो जाता है, इस प्रयोग को मैंने अपने जीवन में हजार बार आजमाया है, और हर बार पूर्ण सफलता ही अनुभव हुई है।

## शत्रुओं पर हावी होने के लिए छत्तीसा यन्त्र

छत्तीसा छत्तीसा।<br>
क्या करे जगदीशा॥

**नाथ सम्प्रदाय में यह कहावत प्रचलित है, कि जिसने अपनी उंगली में छत्तीसा यन्त्र अंगूठी पर अंकित करवा कर धारण कर लिया है, उसका साक्षात् जगदीश भी अर्थात् ईश्वर भी क्या बिगाड़ सकता है।**

छत्तीसा यन्त्र की यह विशेषता होती है, कि इसको किसी भी पंक्ति से गिना जाय, तो उसका कुल जोड़ छत्तीस ही आता है, इसीलिए इसका अत्यन्त महत्व माना गया है, इस अंगूठी को मध्यमा उंगली में धारण किया जाना चाहिए, और यदि चौबीस घण्टे यह अंगूठी धारण किये रहें, तो पहनने वाला व्यक्ति कुछ ही दिनों में शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त कर पाता है, इस अंगूठी के द्वारा वह शत्रुओं पर तो विजय प्राप्त करता ही है, शत्रु उसके सामने नत मस्तक रहते हैं, इसको पहन कर मुकदमें में या कोर्ट में जावे तो पूर्ण वातावरण उसके अनुकूल ही रहता है, यदि उसकी उंगली में पहनी हुई अंगूठी पर न्यायाधीश की दृष्टि पड़े तो उसके विचार भी अनुकूल होने लगते हैं, वास्तव में ही जिनको राज्य-भय हो, इन्कम टैक्स, सेल्स-टैक्स या अन्य किसी प्रकार की बाधाएं अड़चनें कठिनाइयां, शत्रु-भय आदि अनुभव होता हो, तो यह अंगूठी अपने आप में लाजवाब है।

अंगूठी पर सुन्दर ढंग से छत्तीसा यन्त्र अंकित किया हुआ, अपने आप में सुन्दर तो दिखाई देता ही है, सामने वाले पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी डालने में समर्थ होती है, इस अंगूठी के पहनने से जीवन सभी दृष्टियों से निष्कंटक, निर्भय और तनाव रहित हो जाता है।

इसके अलावा यह अंगूठी या दूसरे शब्दों में छत्तीसा यन्त्र मुद्रिका व्यापार वृद्धि और भाग्योदय में विशेष रूप से अनुकूल होती है, वास्तव में हो यह मुद्रिका सही शब्दों में कहा जाय तो जीवन का सौभाग्य मानी गयी है।

## आश्चर्यजनक लक्ष्मी प्राप्त करने के लिए

### चौबीसा यन्त्र

यन्त्र पहिर चौबीसा।<br>
धन, सुख, भाग अनीसा॥

अर्थात्, जो अपनी उंगली में चौबीसा यन्त्र की अंगूठी बनवा कर धारण कर लेता है, वह आश्चर्यजनक रूप से लक्ष्मी प्राप्त करने लगता है, जिस प्रकार का भी भोग वह अपने जीवन में चाहता है, वह भोग, सुख, ऐश्वर्य उसे अनायास ही प्राप्त होने लगते हैं।

इस अंगूठी की विशेषता है कि इसके धारण करने से आर्थिक दृष्टि से निरन्तर उन्नति होती रहती है, चारों तरफ का वातावरण कुछ ऐसा बन जाता है कि उसके आर्थिक स्रोत चारों तरफ से खुल जाते हैं, अच्छे व्यक्तियों से परिचय और सम्पर्क बनता है, और उनके माध्यम से ही जीवन में भोग एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होने लगती है।

गुरु गोरखनाथ के अनुसार चौबीसा और बीसा यन्त्र का एक सा ही प्रभाव है, और दोनों ही कलयुग में तो अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, इसे बांएं हाथ की मध्यमा उंगली में पहिना जाना चाहिए।

मैंने इस अंगूठी का प्रभाव अनुभव किया है, यदि कहीं पर रुपया फंसा हुआ हो या निकल न रहा हो, तो इसके पहिनने से कार्य सम्पन्न होने लगता है, इस अंगूठी की यह विशेषता है, कि यदि व्यक्ति पर कर्जा हो तो यह शीघ्र ही ऋण मिटा देती है, व्यापार नहीं चल रहा हो, तो इसके पहनने से व्यापार बढ़ने लगता है, नया व्यापार शुरू होने लगता है, रुके हुए व्यापार में तेजी आने लगती है, व्यापार में बिक्री बढ़ जाती है, और एक प्रकार से देखा जाय, तो घर में धन की वर्षा सी होने लगती है, वास्तव में ही यह अंगूठी कलियुग में कल्पवृक्ष के समान फलदायक है।

## भोग विलास, सम्मोहन वशीकरण के लिए-

## कामदेव यन्त्र

यन्त्र काम पहरणा।
पत्थर को वश करणा॥

नाथों और प्राचीन ग्रन्थों में तो यह कहावत है, कि कामदेव यन्त्र को पहिन लिया जाय, तो वह व्यक्ति पत्थर को भी अपने वश में कर सकता है, फिर पुरुष या स्त्री की तो बिसात ही क्या है, इस यन्त्र में कुछ ऐसी विशेषता है कि यह किसी को भी सम्मोहित करने में समर्थ है, सामने वाले को अपने आकर्षण में बांधने के लिए यह यन्त्र मुद्रिका अपने आप में लाजवाब है, इस प्रकार की मुद्रिका को सबसे छोटी उंगली में धारण करना चाहिए।

यह अंगूठी जिस पर कामदेव यन्त्र अंकित हो, तो कुछ ही दिनों में पुरुष या स्त्री के शरीर में विशेष प्रकार का आकर्षण पैदा होने लगता है, उसका व्यक्तित्व चुम्बकीय हो जाता है, और यदि अपने अधिकारी से मिलते समय उसकी नजर अंगूठी पर पड़े, तो निश्चय ही वह अधिकारी पहिनने वाले के अनुकूल होता ही है, और उसके कहे अनुसार कार्य करने लग जाता है।

इसी प्रकार यदि प्रेमी अपनी प्रेमिका से बात-चीत करते समय उसका ध्यान आकृष्ट कर ले तो वह पूर्ण सम्मोहन में बंध जाती है, और उसके कहे अनुसार कार्य करने लगती है, इसी प्रकार प्रेमिका भी अपने प्रेमी को इस मुद्रिका के माध्यम से आकर्षण में बांध सकती है, पति अपने पत्नी को या पत्नी अपने पति को इस प्रकार के कामदेव यन्त्र अंकित मुद्रिका के माध्यम से अपने अनुकूल बना सकती है।

दूसरे शब्दों में कहा जाय तो इस अंगूठी के माध्यम से किसी भी व्यक्ति पुरुष या स्त्री को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है, अपने सम्मोहन में बांधे रह सकता है और जीवन भर उससे अपना मनोनुकूल कार्य सम्पन्न करवा सकता है, व्यापारी इसके माध्यम से महत्वपूर्ण ग्राहक बांधे रह सकता है, अपने पार्टनर को अनुकूल बनाये रख सकता है, जीवन के किसी भी क्षेत्र में यह अंगूठी अपने आपमें महत्वपूर्ण है।

इस अंगूठी के माध्यम से सम्मोहन, आकर्षण तथा वशीकरण क्रिया तो सम्पन्न होती ही है, पहिनने वाले के

**जीवन में भोग-विलास की भी वृद्धि होने लगती है, विशेष प्रकार से पुरुषत्व का प्रभाव अनुभव करने लगता है, वास्तव में ही स्त्रियों के लिए यह मुद्रिका सही अर्थों में जीवन का सौभाग्य कही जा सकती है।**

## अनुकूल विवाह एवं प्रेम के लिए—गन्धर्व यंत्र

मैंने अपने जीवन में जितनी बार भी इस अगूंठी के प्रभाव को परखना चाहा, मुझे पूर्ण अनुकूलता ही अनुभव हुई, गन्धर्व मुद्रिका तो देवताओं तक ने धारण की है।

गन्धर्व सारा संसारा।
अब सब कोई हमारा॥

गुरु गोरखनाथ की इन पंक्तियों का तात्पर्य यह है, कि गन्धर्व यन्त्र की यह विशेषता है कि इसको धारण करने पर सारा संसार उसके अनुकूल हो जाता है, वह अपने जीवन में जिसको चाहता है, जिस प्रकार से चाहता है, वह कार्य होने लगता है।

यदि लड़की बड़ी हो गयी हो और उसका विवाह नहीं हो रहा हो, अथवा लड़के का विवाह नहीं हो रहा हो तो गन्धर्व यन्त्र मुद्रिका अपने आप में महत्वपूर्ण उपाय है, पहनने वाला किसी निश्चित पुरुष या स्त्री से ही शादी करना चाहता है और सामने वाला स्वीकृति नहीं देता हो तो इसके धारण करने से सामने वाले व्यक्ति का आकर्षण स्वतः बढ़ जाता है, और अनुकूल स्थिति पैदा हो जाती है, यहा नहीं अपितु शीघ्र मन की इच्छा के अनुरूप विवाह कार्य सम्पन्न होने की दृष्टि से यह मुद्रिका या दूसरे शब्दों में कहा जाय तो गन्धर्व यन्त्र अंकित मुद्रिका अपने आपमें महत्वपूर्ण है।

विवाह के बाद पति पत्नी में प्रेम बना रहे, पति अनुकूल बना रहे, इस दृष्टि से भी यह यन्त्र महत्वपूर्ण है, यदि प्रेमिका चाहे कि उसके प्रेमी का चित्त बदले नहीं तो यह यन्त्र महत्वपूर्ण है, यदि कोई प्रेमी-प्रेमिका को जीवन भर अपने अनुकूल बनाये रखना चाहे, तो यह यन्त्र सर्वाधिक सहयोगी हैं।

वास्तव में ही यन्त्र मुद्रिका जीवन का सौन्दर्य है, इसे किसी भी हाथ की अनामिका उंगली में धारण करना चाहिए।

**वास्तव में ही वे मनुष्य दुर्भाग्यशाली कहे जा सकते हैं, जिनके सामने ऐसे यन्त्र या सुविधा उपलब्ध हो, और वह अपने जीवन में लाभ न उठा सकें या अपनी इच्छा के अनुरूप कार्य सम्पन्न न कर सकें, तो दुर्भाग्य के अलावा और क्या कहा जा सकता है? यह अंगूठी वैवाहिक जीवन को पूर्ण रूप से मधुर बनाये रखने में विशेष रूप से सहायक है।**

## पूर्ण उन्नति के लिए—सरस्वती यन्त्र

जो अपने जीवन में परीक्षा में सफल होना चाहते हैं, जो यह चाहते हैं कि उनकी स्मरण शक्ति तेज हो, जो राज्य में प्रमोशन या उन्नति चाहते हैं, जो लेखन के माध्यम से प्रसिद्धि, यश और सम्मान चाहते हैं, जो किसी भी प्रकार के इन्टरव्यू में सफलता चाहते हैं, उनके लिए सरस्वती यन्त्र अंकित मुद्रिका वास्तव में ही अपने आप में अद्वितीय है।

इसके धारण करने से स्मरण शक्ति तेज होने लगती है, उसकी याद्दाश्त बनी रहती है, और निरन्तर उसे यश और सम्मान प्राप्त होता रहता है।

इस अंगूठी को तर्जनी के मूल में धारण करना चाहिए, बालकों और बालिकाओं के जीवन में पूर्ण सफलता, चातुर्य, बुद्धिमानी, और अद्वितीयता के लिए यह मुद्रिका जीवन का सौभाग्य कही जा सकती है।

### विशेष तथ्य

**ऊपर मैंने कुछ विशिष्ट यन्त्र और उन से सम्बन्धित मुद्रिकाओं का वर्णन विवरण दिया है, तांत्रिक ग्रन्थों और शास्त्रों में इसके बारे में विस्तार से विवेचन है, प्राचीन समय में योगियों, यातियों, संन्यासियों ने तो अपनी समस्याओं के समाधान के लिए मुद्रिकाओं को धारण किया ही है, राजाओं, महाराजाओं, सम्राटों, रानियों, महारानियों और सुन्दरियों ने भी अपने जीवन की पूर्णता के लिए इस प्रकार की मुद्रिकाओं को धारण किया है, और अपने जीवन में पूर्ण सफलता पाई है।**

## भय-बाधा को भगाना है तो भय पर विजय प्राप्त करनी होगी

# भय-बाधा हरण का नागपंचमी प्रयोग

**ना**ग अथवा सर्प की पूजा का स्वरूप पूरे भारतवर्ष में मिलता है, प्रत्येक गांव में ऐसा स्थान अवश्य होता है, जिसमें नाग देव की प्रतिमा बनी होती है और उसका पूजन किया जाता है, नागपंचमी के दिन को तो एक उत्सव रूप में मनाया जाता है, इसके पीछे ठोस आधार है, कारण है, समय के अनुसार मूल स्वरूप को अवश्य भुला दिया गया है।

### क्या नाग देवता है ?

जिस प्रकार मनुष्य योनि होती है, उसी प्रकार नाग योनि भी होती है, पहले नागों का स्वरूप मनुष्य की भांति होता था, लेकिन नागों को विष्णु की अनन्य भक्ति के कारण वरदान प्राप्त हो कर इनका स्वरूप बदल गया, और इनका स्थान विष्णु की शय्या के रूप में हो गया, नाग ही ऐसे देव हैं, जिन्हें विष्णु का साथ हर समय मिलता है, भगवान शंकर के गले में शोभा पाते हैं, सूर्य के रथ के अश्व नाग का ही स्वरूप हैं।

**भय एक ऐसा भाव है, जो कि बली से बली व्यक्ति, बुद्धिमान से बुद्धिमान व्यक्ति की शक्ति को भी नष्ट कर देता है, कोई अपने शत्रुओं से भय खाता है, कोई अपने अधिकारी से भय खाता है, कोई भूत-प्रेतों से भयभीत रहता है, भयभीत व्यक्ति उन्नति की राह पर कदम नहीं बढ़ा सकता है, भय का नाश, भय पर विजय प्राप्त करने से ही संभव है, और नाग देवता, सर्प देवता भय के प्रतीक हैं, इसीलिए इनकी पूजा का विधान हर जगह मिलता है।**

### नाग पंचमी—भय शान्ति का पर्व

आज कल नागपंचमी के पर्व को स्त्रियों का पर्व ही माना जाता हैं, जो कि बिल्कुल गलत है, नाग वास्तविक रूप से कुण्डलिनी शक्ति के स्वरूप हैं, इस विशेष पर्व पर छोटा सा प्रयोग कर व्यक्ति किसी भी प्रकार की भय बाधा को दूर कर सकता है, इसका विधान भी अत्यन्त सरल है।

नागपंचमी के दिन प्रातः जल्दी उठ कर सूर्योदय के साथ सबसे पहले शिव पूजा सम्पन्न करनी चाहिए, शिव पूजा का विधान यदि मालूम न हो तो शिवजी का ध्यान कर शिवलिंग पर दूध मिश्रित जल चढ़ाएं और एक माला 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र जप अवश्य करें।

नाग पूजा में साधक अपने स्थान पर भी पूजा कर सकता है, और किसी देवालय अथवा अपने गांव के स्थान पर भी पूजा सम्पन्न कर सकता है, एक सफेद कागज पर नाग देव का चित्र बनाएं, उस चित्र में विशेष बात यह होनी चाहिए कि नाग देव के मस्तिष्क पर दो आंखें तथा तिलक अवश्य बनाएं, जीभ दो हिस्सों में बंटी हो, इसे अपने पूजा स्थान में स्थापित कर सामने सिन्दूर से रंगे चावलों

पर "नागराज मुद्रिका" स्थापित करे, और एक पात्र में दूध नैवेद्य स्वरूप रखें।

सर्वप्रथम अपने गुरु का ध्यान कर, अपनी भय-पीड़ा की शान्ति हेतु प्रार्थना करें, तत्पश्चात् नाग देव का ध्यान करें, कि—

"हे नाग देव ! मेरे समस्त भय, मेरी समस्त पीड़ाओं का नाश करो, मेरे शरीर में व्याप्त पीड़ा रूपी विष को दूर करो, मेरे शरीर में व्याप्त विष मेरी रक्षा का कारण बने, न कि मेरी ही क्षति का।"

इसके पश्चात् नाग देव चित्र पर सिन्दूर का लेप करें, तथा इसी सिन्दूर से अपने स्वयं के तिलक लगायें, तथा सिन्दूर का लेप **नागराज मुद्रिका** पर भी करें, इसके पश्चात् दोनों हाथ जोड़ कर निम्न मन्त्र का २१ बार जप करें—

**मन्त्र**

जरत्कारुर्जगद्गौरी मनसा सिद्धयोगिनी।
वैष्णवी नागभगिनी शैवी नागेश्वरी तथा॥
जरत्कारुप्रिया स्तीकमाता विषहरेति च।
महाज्ञानयुता चैव सा देवी विश्वपूजिता॥
द्वादशैतानि नमानि पूजाकाले तु यः पठेत्।
तस्य नागभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्॥

**जब यह मन्त्र जप पूर्ण हो जाय तो नागराज मुद्रिका को अपने दांये हाथ में धारण कर लें, और थोडी देर शान्त हो कर बैठ जांय तथा गुरु मन्त्र का जप करते रहें, इससे भय का नाश होता हैं, और बड़ी से बड़ी बाधा से लड़ने की शक्ति प्राप्त होती है।**

पूजन के पश्चात् नाग देव के सम्मुख रखे दूध को प्रसाद स्वरूप स्वरूप स्वयं ग्रहण करें, यदि यह दूध किसी अस्वस्थ व्यक्ति को पिलाया जाय, तो उसके स्वास्थ्य में दिन-प्रतिदिन अनुकूलता प्राप्त होती है।

यदि स्वयं भी किसी पुरानी बीमारी को दूर करना है, अथवा परिवार के किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में उपाय करना है, तो यह प्रयोग ७ दिन तक करें, लेकिन पूजन से पहले अस्वस्थ व्यक्ति के नाम से संकल्प अवश्य लें।

नागराज मुद्रिका का प्रभाव इतना अधिक तीव्र रहता है, कि यदि आप प्रबल से प्रबल शत्रु के पास भी यह मुद्रिका धारण कर चले जाते हैं, तो वह शत्रु आपसे संयत व्यवहार ही करेगा, हानि देने को तो बात ही दूर रहती है, किसी विशेष कार्य पर जाते समय नाग देव का ध्यान कर, मुद्रिका अपने ललाट के मध्य भाग पर तीन बार स्पर्श कर, धारण कर रवाना हों तो कार्य सिद्धि निश्चित रूप से प्राप्त होती है।

## संतान प्राप्ति का नागार्जुन प्रयोग

स्त्रियों के लिए नागपंचमी का विशेष महत्व है, जो स्त्रियां नागपंचमी के दिन नाग देव का विधि-विधान सहित पूजन करती हैं, उनकी संतान प्राप्ति की कामना अवश्य पूर्ण होती है, स्त्रियों को अपनी संतान के रक्षा हेतु भी नागार्जुन प्रयोग करना चाहिए।

नागपंचमी के दिन सांयकाल श्रृंगार कर सुन्दर वस्त्र धारण कर सर्वप्रथम शिव का ध्यान कर नाग देव का पूजन करना चाहिए, इसमें पूजन तो ऊपर दी गई विधि के अनुसार ही है, अन्तर केवल इतना है, कि संतान प्राप्ति तथा संतान रक्षा हेतु नाग मुद्रिका के स्थान पर **नागार्जुन गुटिका** स्थापित करनी चाहिए, तथा निम्न मन्त्र का जप करें—

अनन्तं वासुकिं शेषं पद्मनाभं च कम्बलम्।
शंखपालं धृतराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा॥
एतानि नव नामानि नागानां च महात्मनाम्।
संतान प्राप्यते संतान रक्षा कर
सर्वबाधा नास्ति सर्वत्र सिद्धि भवेत्॥

**यह प्रयोग सात बुधवार तक सम्पन्न करें और प्रत्येक दिन पूजा के पश्चात् इस नागार्जुन गुटिका को काले कपड़े में सी कर अपनी बांह पर अथवा अपनी कमर पर धारण करें, तो उसकी कामना पूर्ति अवश्य होती है।** ●

# अपना व्यक्तित्व कैसे उभारें ?

जब आप किसी से मिलने जाते हैं, तो क्या वह आपसे प्रभावित होता है ? क्या आपके मित्र आपको महफिल की शान समझते हैं ? क्या आपके पीठ पीछे लोग आपको 'बोर' समझते हैं ? ये सब खेल व्यक्तित्व का है, इसे प्रभावशाली बनाया जा सकता है ।

एक बड़ी कम्पनी में इन्टरव्यू था, दो मित्र इन्टरव्यू देने पहुंचे, एक सामान्य ज्ञान वाला था और दूसरा बहुत अधिक पढ़ा लिखा, विषय का पूरा ज्ञान रखने वाला व्यक्ति था, लेकिन इन्टरव्यू में साधारण ज्ञान वाले व्यक्ति का चयन हो गया, ऐसा क्यों ?

कोई-कोई व्यक्ति दिखते तो साधारण से हैं, लेकिन स्त्रियां उनसे बहुत प्रभावित रहती हैं और आप बार-बार प्रयास करते हैं, लेकिन कोई आंख उठा कर भी नहीं देखता, ऐसा क्यों ?

आप अपने कार्यालय में डट कर मेहनत करते हैं, जैसा अधिकारी कहता है, वैसा तो क्या उससे ज्यादा ही कार्य करते हैं, फिर भी अधिकारी का गुस्सा आप पर ही रहता है, ऐसा क्यों ?

दुकानदारी में आप अपनी ओर से ग्राहक को मीठा बोलते हैं, उसे पटाने का पूरा प्रयास करते हैं, भाव-ताव भी ठीक रखते हैं, लेकिन ग्राहक आते ही नहीं, ऐसा क्यों ?

**इन सब का उत्तर केवल एक शब्द में निहित है, और वह है आपका "व्यक्तित्व", व्यक्तित्व न तो शारीरिक सौन्दर्य में है अर्थात् यदि आप लम्बे, चौड़े, गोरे रंग के हुए तो सब आपसे प्रभावित ही हो जायेंगे, ऐसा नहीं है, व्यक्तित्व ज्ञान में भी नहीं है, ऐसा नहीं है कि आपको किसी विषय विशेष का बहुत ज्ञान है, तो लोग सीधे आपके चरणों में ही आकर बैठ जायेंगे, तो फिर व्यक्तित्व क्या है ?**

व्यक्तित्व अर्थात् पर्सनालिटी विचित्र विरोधाभासों का संगम है, व्यक्तित्व एक सुमधुर राग है, जिसे सही ढंग से बजाया जाय तो कानों को प्रिय लगता है, अन्यथा बिना लय के वही राग अत्यन्त कटु लगने लगता है, व्यक्तित्व आपके शरीर में, कार्यों में, बोलने में, चलने में, व्यवहार करने में, खाने-पीने में, मुस्कराने में एक लयबद्धता का नाम है, इसके लिए आपको कुछ ओढ़ना नहीं पड़ता है, अपने स्वाभाविक गुणों का विकास करना है, आप के शास्त्र कहते हैं कि हर समय मुस्कराना चाहिए, क्या इसे हर जगह प्रयोग में लाया जा सकता है? गंभीर चर्चा चल रही है, और आप हैं कि मुस्कराये चले जा रहे हैं, कहीं शोक

संवेदना प्रकट करनी हैं, और आप हैं कि मुस्कराते हुए संवेदना प्रकट कर रहे हैं, आपका अधिकारी आप पर गुस्सा हो रहा है, और आप मुस्कराये चले जा रहे हैं, इसलिए ध्यान रखिये कि जहां गंभीरता आवश्यक है, वहां अपने दांत नहीं निकालें।

जैसा आपका शरीर है, रूप रंग है, पहनावा उसी के अनुरूप होना चाहिए, शरीर तो आपका कृष्णवर्णीय, और कपड़े पहन रहे हैं आप चटख रंगों के, अपने शरीर के अनुसार, स्थान के अनुसार, कार्य के अनुसार वस्त्रों का चुनाव करें, वस्त्र महंगा होना आवश्यक नहीं है, वह आपके व्यक्तित्व की शोभा होना चाहिए, जब भी किसी बड़े आदमी से मिलने जांय तो हलके रंग के कपड़े पहने, जब भी पैन्ट-शर्ट पहनें, तो जूते मोजों सहित अवश्य पहनें, चेहरे पर क्रीम लगाते हैं, तो अपने जूतों की पालिश का भी ख्याल रखें, पैन्ट-शर्ट पहनें तो शर्ट हमेशा पैन्ट के अन्दर डाली हुई हो, वस्त्र न तो अत्यन्त कसे हुए हों और न ही बिल्कुल ढीले-ढाले, अपने अधिकारी से बातें करें अथवा किसी अन्य बड़े आदमी से, तो सीधे बैठें, चाहे वह आपसे कितना ही हंस कर बात करे, ढीले-ढीले पसर कर न बैठें, ऐसा लगना चाहिए कि आप उसकी बात पूरे ध्यान से सुन रहे हैं, जहां तक हो सकता है, तीव्र विवाद से बचें, यदि आप किसी की बात को काटना चाहते हैं, तो यह कहने की बजाय कि, "नहीं-नहीं आप बिल्कुल गलत हैं, सही बात तो यह है", इसकी जगह आप यह कह सकते हैं, कि "संभवतया आप सही हैं, लेकिन मेरे विचार से यह बात ऐसी है।"

जब आप ऐसा प्रकट करते हैं, कि सामने वाले की बात ध्यान से सुन रहे हैं, तो उसको अच्छा लगता है, कई लोग बात सुनते हुए, जो कि उनकी इच्छा के विपरीत होती है, तो उबासी लेने लगते हैं, इधर-उधर खुजली करते हैं, यह बिल्कुल गलत है, यदि आपको किसी प्रश्न का उत्तर न आए अथवा कोई बात समझ में न आये, तो अपना उत्तर अन्दाज से न दें, स्पष्ट रूप से कहें कि मुझे इसका ज्ञान नहीं है, अथवा यह बात मैं समझ नहीं पा रहा हूं।

जहां तक चाल का प्रश्न है, यह व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता है, चलते समय, निखरते हुए चलें, मटकते हुए, जूतों को घसीटते हुए न चलें अपनी चाल सुधारने का हर समय प्रयत्न करते रहें।

हमेशा बातचीत में मुस्कान सहित शान्त व्यवहार बनाये रखें, यदि कोई आपसे कम ज्ञान वाला है, तो अपना ज्ञान उसके सामने बघारने का प्रयास भी न करें, और यदि किसी विषय वस्तु का ज्ञान न हो, तो उस समय चुप रह कर सुनना ही बेहतर है, किसी भी विषय के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी हो तो ही बोलें, किसी से भी बातचीत के समय मन में पहले से ही विचार कर लें कि मुझे क्या कहना है, और किस प्रकार कहना है, अपनी बात को बार-बार दोहरायें नहीं बार-बार दोहराने से बात का प्रभाव ही समाप्त हो जाता है, कम से कम शब्दों में बोलना ही उचित रहता है, और जब भी कोई बात सुन रहे हों तो "हूं" का प्रयोग कभी भी न करें, सुनते समय "जी" "अच्छा" "हां" जैसे शब्दों का प्रयोग करें, जब कोई बात सुन रहे हों, तो आपका पूरा ध्यान उस बात की ओर होना चाहिए, अपने विचारों को केन्द्रित कर लें, ऐसा न हो कि सुन रहे हैं और खोये हैं दूसरे ख्यालों में, फिर एकाएक चौंक कर जवाब देते हैं।

कई लोग अपनी बातचीत में एक **'तकिया कलाम'** डाल देते हैं, और यह उनकी आदत बन जाती है, अपनी इस आदत को पहिचान कर छोड़ने का प्रयत्न करें, कई लोग बातचीत में गाली का प्रयोग विशेष रूप से करते हैं, उन्हें ध्यान भी नहीं रहता, कि वह गाली बोल रहे हैं, इसे भी पहिचान कर बिल्कुल ही दूर करने का प्रयत्न करें।

**अच्छे व्यक्तित्व की यही पहिचान है कि वह अपनी रुचि, अपना व्यवहार संयत बनाये रखेगा, बातचीत की ओर पूरा ध्यान देगा, स्त्रियों से बातचीत करते समय**

( शेष भाग पृष्ठ संख्या २८ पर देखें )

## यदि जीवन में उत्साह, आनन्द नहीं है

## तो अब कीजिये

# सुवर्ण गौरी साधना

### जो अति आनन्द, वैभव, अक्षय धनदात्री, सौभाग्य प्रदात्री देवी है

**जीवन में उत्साह, आनन्द, निरन्तर सफलता मिलने से, कार्य सिद्धि होने से तथा पारिवारिक सुख शान्ति, अनुकूलता से ही प्राप्त होता है, "सुवर्ण गौरी" आनन्द की देवी है, जो एक बार सिद्ध हो जाने पर साधक के जीवन में हर समय अपना प्रभाव देती रहती है, "सुवर्ण गौरी साधना" जीवन के रेगिस्तान में अमृत कुण्ड के समान है ।**

---

साधक जब साधना के क्षेत्र में प्रवेश करता है, तो उसका प्रथम लक्ष्य साधना में तत्काल सफलता प्राप्त कर, अपने जीवन की विसंगतियों को हटा कर, जीवन में एक नवीनक्रम का निर्माण करना होता है, साधक की यही इच्छा रहती है, कि उसे अपने जीवन का आनन्द पूर्ण रूप से प्राप्त हो, अपने कार्यों में तात्कालिक सफलता मिले, यदि वह पुरुष हो तो सदैव यही चाहता है, कि उसका गृहस्थ जीवन विशिष्ट हो, पत्नी विचारों के अनुकूल, उसकी सहयोगी और उसे पूर्ण आनन्द प्रदान करने वाली हो, इसी प्रकार प्रत्येक स्त्री यही चाहती है, कि उसका पति, पति होने के साथ-साथ उसका मित्र भी हो, जो उसकी भावनाओं को पूर्ण रूप से समझे, उसके जीवन में कमी न आने दे और श्रेष्ठ संतान हो, जीवन बढ़ने के साथ-साथ सुख बढ़ता रहे ।

## सुवर्ण गौरी साधना

पूज्य गुरुदेव की लीला को भी हर कोई समझ नहीं पाता है, जब वे अपने मूड में होते हैं, तो फिर बात ही कुछ और बनती है, यदि "दुर्गा" के सम्बन्ध में कुछ बोलने का उनका मूड आता है, तो वे इस सम्बन्ध में हजारों मन्त्रों सहित ऐसी साधनाएं, ऐसा ज्ञान प्रकट करते

हैं, कि आश्चर्य शब्द भी छोटा पड़ जाता है, कृष्ण के सम्बन्ध में उनका व्याख्यान, उनका ज्ञान शब्दों में नहीं बांधा जा सकता है, एक बार उनके एक प्रिय शिष्य ने कहा, कि गुरुदेव मेरे जीवन में उत्साह नहीं है, मैं कोई भी काम करने का विचार करता हूं, तो मुझे पहले असफलता का ही ध्यान आता है, जिन लोगों को मैंने बार-बार सहयोग दिया, उनसे समय पड़ने पर थोड़ा भी सहयोग मांगता हूं, तो वे लोग कन्नी काट जाते हैं, घर-परिवार के लोग भी असंतुष्ट ही रहते हैं, और तो और मेरी पत्नी भी मुझे नकारा-बेकार समझती है, हम दोनों के विचारों में कोई ताल-मेल नहीं है, मेरे लिए सुबह कोई नया उत्साह नहीं लेकर आती है।

शिष्य ने पूछा मैंने ऐसे कौन से दोष किये हैं कि मेरे जीवन में ऐसी स्थिति बन गई है? क्या इसका कोई उपाय है, अथवा मुझे अपना जीवन इसी प्रकार काटना पड़ेगा?

**इस पर गुरुदेव ने कहा कि तुम जो कह रहे हो, वह केवल तुम्हारे ऊपर ही लागू नहीं होता है, जीवन जीना और काटना दोनों अलग-अलग बातें हैं, सौ में अस्सी लोग तो जीवन का भार उठाते हुए चल रहे हैं, कभी-कभी कोई प्रसन्नता की किरण आ जाती है, इसमें दोष तो उसका खुद का ही है, साधना में सबसे पहले आवश्यकता इस बात की है, कि जीवन में उत्साह का निर्माण हो, हर सुबह नवीन लगे, मन में आनन्द की लहर बने।**

पूज्य गुरुदेव ने सुवर्ण गौरी साधना का जो विधान बताया, और जिन शिष्यों ने इसे सामान्य रूप से सम्पन्न करके भी अपने जीवन को एक नया आयाम दिया, उसके बारे में बहुत कुछ लिखा जा सकता है।

## सुवर्ण गौरी रहस्य

**"सुवर्ण गौरी"** शक्ति का सौभाग्य स्वरूप है, जो कि अप्सरा कही जाती है, सुवर्ण गौरी का विशेष नाम **शिवदूती"** भी है, जो कि भगवान शिव की कृपा एवं वर प्राप्त कर अपने सर्वांग स्वरूप में प्रिया है, **"आनन्द मंदाकिनी"** शिव की शक्तियों के सम्बन्ध में एक प्रामाणिक ग्रन्थ है, जिसमें इस साधना के सम्बन्ध में पूर्ण विधि-विधान सहित लिखा गया है, इस ग्रन्थ में सुवर्ण गौरी के स्वरूपों के सम्बन्ध में लिखा है, कि इसके सोलह स्वरूपों की सिद्धि जो साधक प्राप्त कर लेता है, वह संसार का अधिपति होने का सौभाग्य प्राप्त कर सकता है, सुवर्ण गौरी के ये सोलह स्वरूप हैं—

१-अमृताकर्षणिका, २-रूपाकर्षणिका,
३-सर्वासाधिनी, ४-अनंगकुसुमा,
५-सर्वदुखविमोचनी ६-सर्वसिद्धिप्रदा,
७-सर्वकामप्रदा, ८-सर्वविघ्ननिवारणी,
९-सर्वस्तम्भनकारिणी, १०-सर्वसम्पत्तिपूर्णी,
११-चित्ताकर्षणिका, १२-कामेश्वरी,
१३-सर्वमंत्रमयी, १४-सर्वानन्दमयी,
१५-सर्वेशी, १६-सर्ववाशिनी।

इन सोलह स्वरूपों में से यदि एक स्वरूप की सिद्धि भी प्राप्त हो जाय, तो जीवन का अन्धकार दूर हो जाता है, आगे साधना क्रम में सम्पूर्ण रूप से पूजन का विधान दिया जा रहा है, यदि कोई साधक किसी एक विशेष स्वरूप की ही साधना करना चाहता है, तो उसे भी कर सकता है।

## सुवर्ण गौरी—प्रिया स्वरूप

प्रिया का तात्पर्य है, जो आपको प्रिय हो, जिसके कहे अनुसार आप कार्य करें, जिसके पास रहने से आपको आनन्द का अनुभव हो, जो आपके जीवन में उत्साह भरे, आपकी कमियों को हटाए, और आपके प्रति समर्पण का भाव हो।

**"आनन्द मंदाकिनी"** ग्रन्थ में लिखा है, कि सुवर्ण गौरी साधना सम्पूर्ण रूप से तो सिद्ध प्रिया रूप में ही हो सकती है, तब यह विशिष्ट शक्ति जीवन में हर स्थिति में आपके कार्यों को उचित परिणाम, अभीष्ट फल प्राप्त करा सकती है, सिद्धि होने पर आपको हर समय यह ध्यान

रहता है, कि यह शक्ति आपकी सहयोगी रूप में विद्यमान है, आप अपने मन के भावों को प्रकट कर सकते हैं, अपनी इच्छाओं को बिना संकोच बता सकते हैं, और अपनी इच्छाओं की पूर्ति का सरल, सहज मार्ग प्राप्त कर सकते है।

**ज्यादातर व्यक्ति प्रेम और काम को एक ही रूप में देखते हैं, सोचते हैं, जो कि बिलकुल गलत है, प्रेम मन की अभिव्यक्ति है, और काम शरीर की अभिव्यक्ति, और मन हमेशा शरीर से ऊपर है इस कारण सुवर्ण गौरी साधना, काम वासना भाव से कभी भी सिद्ध करने का प्रयास न करें, इसे प्रेम भाव से प्रिया रूप में ही सिद्ध करने का प्रयास करें।**

## साधना विधान

यह साधना सांयकाल के पश्चात् की जाने वाली साधना है, और सोमवार को सम्पन्न करनी चाहिए, साधना के लिए आवश्यक है, कि चित्त में प्रसन्नता, उत्साह, का भाव होना चाहिए।

इस साधना के लिए **'सुवर्ण गौरी पद्म' 'सोलह सिद्ध शक्ति काम्य फल'** तथा **'सुवर्ण गौरी अनंग माला'** आवश्यक है, साधना में पीले रंग का प्रयोग विशेष रूप से होता है, अतः साधक-साधिका पीले रंग की धोती धारण करें, पीले रंग के आसन पर बैठ कर साधना करें।

इसके अतिरिक्त साधना हेतु शुद्ध घी का दीपक, अष्ट गन्ध, सिन्दूर, चन्दन, केवड़ा मिश्रित सुगन्धित जल, चावल, पीले पुष्प, ताम्रपात्र, नैवेद्य हेतु लड्डू इत्यादि की व्यवस्था पहले से कर लें, पूजा स्थान में अर्थात् जहां आप साधना कर रहे हैं, वहां घी का दीपक तथा सुगन्धित अगरबत्तियां जला दें, अपने आसन पर बैठ कर पूर्व दिशा की ओर मुंह करें, तथा सामने एक पात्र में **'सुवर्ण गौरी पद्म'** स्थापित करें, और सुवर्ण गौरी का ध्यान करते हुए आह्वान करें, यह मूल रूप से सुवर्ण गौरी का स्वागत मन्त्र है—

### स्वागत मन्त्र

गौरी दर्शनमिच्छन्ति देवाः स्वामीष्टसिद्धये।
तस्यै ते परमेशायै स्वागतं स्वागतं च ते।।
कृतार्थोनुग्रहीतोऽस्मि सकलं जीवितं मम।
आगता देवि देवेशि सुस्वागतमिदं पुनः।।

इस स्वागत मन्त्र का पांच बार जोर-जोर से उच्चारण कर 'सुवर्ण गौरी पद्म' पर अष्ट गन्ध, सिन्दूर, चन्दन, इत्र, पीले पुष्प, चढ़ायें और सामने एक पात्र में नैवेद्य अर्पित करें, यदि आपके पास सोने की अंगूठी अथवा कोई स्वर्ण आभूषण हो तो 'सुवर्ण गौरी पद्म' के सामने उस पात्र में आभूषण को धो कर रखना चाहिए।

अब एक-एक कर सोलह सिद्ध शक्ति काम्य फल स्थापित करें, ये स्वर्ण गौरी के सोलह शक्ति स्वरूप हैं, इस हेतु सोलह चावल की ढेरी बना कर प्रत्येक शक्ति का नाम लें, और आह्वान करते हुए एक-एक 'सिद्ध शक्ति काम्य फल' स्थापित करें—

ॐ सुवर्ण गौरी अमृताकर्षणिका पूजयामि नमः।
ॐ सुवर्ण गौरी रूपाकर्षणिका पूजयामि नमः।
ॐ सुवर्ण गौरी सर्वासाधिनी पूजयामि नमः।
..............................................क्रमशः।

इस प्रकार प्रत्येक शक्ति का आह्वान करते हुए सुवर्ण गौरी सिद्ध शक्ति काम्य फल स्थापित करें और प्रत्येक शक्ति को पुष्प, इत्र, चावल, चढ़ाएं।

जब यह स्थापना क्रम पूरा हो जाय तो सात दीपक जलायें, तथा सुवर्ण गौरी मन्त्र का जप अनंग माला से प्रारम्भ करें।

### सुवर्ण गौरी मन्त्र

युं क्षं ह्लीं सुवर्ण गौरी सर्वान्कामान्देहि
यं कुं ह्लीं युं नमः।।

अब इस मन्त्र की सात माला जप करना है, और जप प्रारम्भ करने पहले दायें हाथ जल ले कर संकल्प लें, **"त्रैलोक्यमोहने चक्रे इमाः प्रकट सुवर्ण गौरी"** इस प्रकार प्रत्येक माला मन्त्र जप के पश्चात् यह संकल्प जल लेकर करना है, जब सात माला मन्त्र जप पूरा हो जाय, तो एक थाली में सात दीपक ले कर आरती सम्पन्न करें, तथा प्रसाद ग्रहण करें।

साधना क्रम के विधान में यह आवश्यक है, कि साधक रात्रि को वही भूमि पर शयन करें, कई साधकों को तो प्रथम बार साधना में ही रात्रि में विशेष अनुभूति होती है, स्वप्न एक साकार रूप में सिद्ध हो कर सुवर्ण गौरी उपस्थित होती है, कमरे में एक पीला प्रकाश फैल जाता है, ऐसे समय साधक तत्काल उठ खड़ा हो, और अपना मन चाहा वर मांग लें।

यह साधना तीन सोमवार तक नियमित रूप से अवश्य करना चाहिए, प्रत्येक साधना क्रम में सुन्दर अनुभव प्राप्त होता है, एक बार सुवर्ण गौरी सिद्ध होने पर पूरे जीवन भर सहयोग प्राप्त होता रहता है, साधक के मन में एक प्रिय भाव हमेशा बना रहना चाहिए, जो साधक सिद्धि प्राप्त होने पर गर्व, घंमड अभिमान से भर जाते हैं, और गलत कार्यों की कामना करने लगते हैं, उनकी सिद्धि उतनी ही नष्ट भी हो जाती है।

**सुवर्ण गौरी साधना तो, साधना मन उपवन का ऐसा सुगन्धित पुष्प है, जिसकी आनन्द गन्ध एक बार पूर्ण रूप से प्राप्त हो जाय, तो पूरे जीवन प्राणों में आनन्द का संचार हो जाता है।**

---

( पृष्ठ संख्या २४ का शेष भाग )

**उनके मुख की ओर देख कर ही बात करें, न कि बातचीत करते पूरे शरीर पर दृष्टि घुमाते रहें, यह बड़ा ही अशोभनीय और हलका लगता है।**

किसी भी व्यक्ति से बातचीत करते समय उसकी आंखों में देखें और बातचीत का जबाव दें, नजरें चुराने का प्रयत्न न करें, बातचीत करते समय नाक पर उंगली फिराना, दांत कुरेदना, असभ्यता के लक्षण हैं।

जहां तक हो सके, अपना व्यवहार सामान्य बनाये रखें, तभी आपका व्यक्तित्व दूसरों के लिए आकर्षण का कारण बन सकेगा, छोटे व्यक्ति से, गरीब से, मजदूर से, नौकर से बातचीत करते समय झिड़कने का, वितृष्णा का भाव कभी भी नहीं होना चाहिए, और अपने अधीनस्थ व्यक्तियों से उतनी ही बात करें, जितनी आवश्यक है, अन्यथा कल वे ही आपको महत्व नहीं देंगे।

घर से बाहर निकलते समय एक बार दर्पण में अवश्य देख लें कि क्या मैं बिल्कुल ठीक-ठाक दिख रहा हूं, पहनावे में एक पूर्ण लय होनी चाहिए, अपनी उम्र के अनुसार अपना पहनावा, अपना व्यवहार बनायें।

**ये सब बातें बहुत छोटी-छोटी बातें हैं, लेकिन व्यक्तित्व निर्माण के लिए अत्यन्त आवश्य हैं, केवल ज्ञान, बुद्धि, रूप आपको श्रेष्ठ व्यक्तित्व का नहीं बना सकता है, अपने आत्म विश्वास को जागृत करते हुए अपने व्यक्तित्व का अंग बनायें।**

# मुहूर्त ज्योतिष

**ज्योतिष का आधार है ग्रह गति एवं कालगणना और इसका तत्क्षण फल है, मुहूर्त, जिसे प्रेक्टिकल तौर पर अपनाने से लाभ ही लाभ है।**

**कुछ विशेष मुहूर्त, गणनाएं, जिन्हें समझें और अपनाएं—**

जीवन के प्रत्येक क्षण का एक अदृश्य संचालक है, जिसकी व्यवस्था से यह समय चक्र गतिशील रहता है, दिन, रात, रात के बाद फिर ठीक समय पर दिन, निश्चित स्थान पर सूर्योदय–सूर्यास्त, ठीक समय पर ऋतुओं का आगमन–प्रस्थान आदि सभी कार्य एक निश्चित व्यवस्था एवं निश्चित प्रणाली के अनुसार होते हैं, अतएव यह स्पष्ट है कि हम जो कुछ भी कर रहे हैं, या भोग रहे हैं, वह एक विराट सत्ता की देन है।

यह परिवर्तन काल के अन्तर्गत ही होता है, गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है—**"कालः कालयताऽहम्" "कालोऽस्मि लोकक्षयकृत प्रबुद्धः"**, यह काल भी सूर्य के वशवर्ती होकर चलता है **"चक्रवत् परिवर्तनेन कालः सूर्य वशात् सदा"** अर्थात् भचक्र में भ्रमण करती हुई पृथ्वी जब एक चक्र पूरा कर लेती है, तो हमने उसे वर्ष की संज्ञा दी है।

**इस भचक्र की बारह राशियों के आधार पर बारह मास, एक-एक अंश के समान एक मास में तीस दिन, एक-एक दिन में साठ घड़ी, एक घड़ी में साठ पल, एक पल में साठ विपल, एक विपल में साठ प्रतिपल, इस प्रकार सूक्ष्मातिसूक्ष्म काल गणना बढ़ती चली जाती है।**

महर्षियों ने काल के मुख्यतः पांच अंग माने हैं—१-वर्ष, २-मास, ३-दिन, ४-लग्न और ६-मुहूर्त, ये परस्पर उत्तम व बली हैं, अर्थात् दोष युक्त वर्ष को श्रेष्ठ मास ठीक कर देता है, यदि मास दोषयुक्त हो पर दिन बलवान और श्रेष्ठ हो तो मास का दोष नहीं लगता, इसी प्रकार शुद्ध मुहूर्त होने पर वर्ष, मास, दिन या अशुभ लग्न का दोष नहीं लगता, इसीलिए महर्षियों ने समस्त कार्यों में मुहूर्त शुद्धि देखने की आज्ञा दी है।

## मुहूर्त क्या है ?

मुहूर्त शुभ तथा अशुभ दोनों ही प्रकार के होते हैं, इस पर विचार कर ही कार्य करना चाहिए, पूरे एक दिवस में दिन के काल में १५ मुहूर्त तथा रात्रि के काल में १५ मुहूर्त होते हैं, मुहूर्त की समयावधि निकालने का सीधा तरीका दिनमान को १५ बराबर भागों में बांटना है, यदि किसी विशेष तिथि का दिनमान ३०/१५ है, इसमें १५ का भाग दिया तो इकाई २/१ आई, अर्थात् एक मुहूर्त की अवधि उस दिन २ घटी १ पल है, यह तो स्पष्ट है कि १ घटी बराबर २४ मिनटों की होती है, तथा १ पल का तात्पर्य २४ सेकेण्ड होता है, इस प्रकार उपर्युक्त उदाहरण मुहूर्त की अवधि ४८ मिनट् २४ सेकेण्ड स्पष्ट हुई।

इसी प्रकार रात्रिमान को भी १५ भागों में बांटने से राशि के मुहूर्त की अवधि ज्ञात हो जाती है, प्रत्येक पंचांग में दिनमान और रात्रिमान स्पष्ट रूप से दिया हुआ होता है, यदि किसी पंचांग में केवल दिनमान ही दिया है तो ६०/०० में से दिनमान घटाने पर शेष रात्रिमान होता है।

### विजय मुहूर्त

यह विशिष्ट मुहूर्त सबसे अधिक श्रेष्ठ एवं अभिजित-मुहूर्त कहा गया है—

दिन मध्यगते सूर्ये मुहूर्तेह्यभिजित्प्रभु।
चक्रमादाय गोविन्दः सर्वान्दोषान्निकृन्तति॥

—ज्योतिष सार संग्रह

सूर्य जब ठीक सिर पर हो, अर्थात् मध्याह्न के पौने बारह बजे से साढ़े बारह बजे तक के समय को **'अभिजित-मुहूर्त'** या **'विजय मुहूर्त'** कहा जाता है, **'नारद पुराण'** ने इस मुहूर्त का समय दोपहर के ११-३६ से १२-२५ तक माना है, विद्वानों ने सूर्योदय के बाद के चतुर्थ लग्न का **"अभिजित लग्न"** या **"विजय लग्न"** माना है।

**अभिजिन्मुहूर्त में किये गये कार्य हमेशा सफल होते हैं, चाहे और कितने ही दोष क्यों न हों, अभिजिन्मुहूर्त या अभिजित लग्न उन समस्त दोषों का नाश कर देता है।**

अब पत्रिका पाठकों हेतु कुछ विशेष मुहूर्त स्पष्ट किये जा रहे हैं, इनके अनुसार कार्य कर पाठक स्वयं ही अनुभव कर सकेंगे कि मुहूर्त का कितना अधिक महत्व है और शुभ मुहूर्त में किये गये कार्यों का फल कितना श्रेष्ठ होता है—

## १-जन्म दिन मुहूर्त

जिस तिथि को लग्न हो, वर्ष के पश्चात् उसी तिथि को वर्षगांठ मनानी चाहिए, प्रातःकाल मंगल स्नान करवा कर सुसज्जित वस्त्राभूषणों को धारण कर गणपति, कुल-देवता का पूजन करें।

जन्म दिन में तिल का प्रयोग आयुवर्धक है, आम्र पत्तों की १०८ आहुतियां आरोग्यवर्द्धक एवं आयुवर्द्धक कही गयी हैं—

तिलोद्वर्ती, तिलस्नायि तिलहोमी तिलप्रदः।
तिलभुक् तिलवर्णी च षट्तिली नावसीदति॥

**जन्म दिन को हजामत, यात्रा, स्त्रीसंग, कलह, मांस-भक्षण, हिंसा आदि वर्जित है।**

## २-विद्यारम्भ मुहूर्त

मास –उत्तरायण रवि।

तिथि –२, ३, ५, ७, ६, ११, १२, १५ (शुक्ल पक्ष)

वार –रवि, गुरु, शुक्र।

नक्षत्र– अ०, मृग०, आ०, पुन०, पु०, श्ले०, पूर्वा ३, ह०, चि०, श्र०, ध०, श०।

### टिप्पणी

**भद्रा त्याज्य है।**

**सामान्य अक्षर सीखने के पश्चात् कुल विद्या या जीविकोपार्जन हेतु जो सीखा जाता है, उसे विद्यारम्भ कहते हैं।**

## ३-बही खाता प्रारम्भ मुहूर्त

तिथि –१ (कृ०), २, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५ (शुक्ल पक्ष)।

वार –रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र।

नक्षत्र –अश्वि०, रो०, मृग०, पुन०, पुष्य, उत्तरा-३, ह०, चित्रा, अनु०, श्र०, ध०, रे०।

लग्न –१, ३, ४, ७, ६, १० राशि लग्न।

### टिप्पणी

केन्द्र, त्रिकोण में पाप ग्रह न हो तथा लग्न पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि न हो।

विजया दशमी, दीपावली, अक्षय तृतिया, नवरात्रि-स्थापना दिवस आदि दिन बिना मुहूर्त के भी श्रेष्ठ हैं।

चतुर्मास एवं गुरु शुक्रास्त पूर्णतः वर्जित है।

## ४-आवेदन मुहूर्त

तिथि –२, ३, ५, १०, १३ (कृष्ण पक्ष)

वार –रवि, चन्द्र, गुरु, शुक्र।

नक्षत्र –अश्वि०, रो०, मृग०, पुन०, पुष्य, उत्तरा-३, श्र०, ध०, शत०, रेवती।

### टिप्पणी

किसी पद के लिए, कार्य सिद्धि हेतु या किसी व्यापारिक कार्य के लिए उपर्युक्त मुहूर्त पर ध्यान देना चाहिए।

पर ध्यान रहे कि उस दिन प्रार्थी का चन्द्र बलवान हो, शुभ हो तथा लग्नेश भी सशक्त हो।

## ५-भवन निर्माण मुहूर्त

मास –वैशाख, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ तथा फाल्गुन।

(मास का चयन द्वार मुख के अनुसार करना आवश्यक है, पूर्व-पश्चिम द्वार मुख हो तो–श्रावण, भाद्रपद, माघ फाल्गुन। उत्तर-दक्षिण द्वार.मुख हो तो वैशाख, ज्येष्ठ, कार्तिक, मार्गशीर्ष)

पक्ष –भवन निर्माण हेतु शुक्ल पक्ष ही ग्राह्य है।

तिथि –२, ३, ५, ६, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल पक्ष)। कुछ विद्वानों के अनुसार–५, ६, १०, ११ तिथियां वर्ज्य मानी है।

## ६-नौकरी करने का मुहूर्त

तिथि –दोनों पक्षों की २, ३, ५, ७, १०, १३, १५।

वार –बु , गुरु, शुक्र।

नक्षत्र –अ०, मृग०, पु०, चि०, अनु०, रे०।

### टिप्पणी

१०, ११वें सूर्य, मंगल, शुभ हैं, लग्न में १, २, ४, ७, १०, ११ भाव में शुभ ग्रह होना आवश्यक है।

सूर्य ५, १४, २३ अंश पर हो तब नृप बाण कहलाता है।

## ७-सवारी (वाहन) लाने का मुहूर्त

तिथि –१ (कृ०), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १५ (शुक्ल पक्ष)।

वार –चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र।

नक्षत्र –अ०, मृ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, श्र०, ध०, शत०, रे०,।

लग्न –२, ३, ४, ६, ७, ६, १२, राशि लग्न।

## ८-शत्रु ताड़न प्रयोग

तिथि –३,४, ६, १३, १४।

वार –सोम०, मंगल, शनि०।

नक्षत्र –म०, आर्द्रा, श्ले०, म०, पू० ३, ज्येष्ठा, मूल।

### टिप्पणी

लग्न १, ५, ८, १०, ११ शुभ हैं, लग्न में क्रूर ग्रह जरूरी है, शत्रु पर मुकदमा चलाने या उसे पीटने के लिए उपर्युक्त मुहूर्त श्रेयस्कर है।

## ६-शत्रु संधि (राजीनामा) मुहूर्त

तिथि –दोनों पक्ष की २, ३, ५, ६, ८, १०, १२, १३।

वार –चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र।

नक्षत्र –पुष्य, मघा, पू०-फा०, अनु०।

### टिप्पणी

लग्न शुभ हो।

## १०-मन्त्र साधन मुहूर्त

तिथि –४, ६, ८, ११, १४ (दोनों पक्षों की)
वार –रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र।
नक्षत्र –भ०, आ०, म०, मू०।
लग्न –५, ११ हो।

### टिप्पणी

संक्रान्ति, दीपावली, होली, दुर्गाष्टमी, ग्रहण का दिन तथा नवरात्रि भी शुभ हैं।

मघार्द्रा भरणी मूले मृगे गें सरले घटे।
शुद्धाष्टमे मृगो तूर्ये वीर वेताल साधनम्॥

—मुहूर्त गणपति

## ११-भूमि के क्रय विक्रय का मुहूर्त

तिथि –२, ५, ६, १०, ११, १५ (दोनों पक्ष)।
वार –गुरु, शुक्र।
नक्षत्र –मृ०, पुन०, श्लेषा, मघा, वि०, अनु०, मू०, रे०।
लग्न –२, ५, ८,।

### टिप्पणी

केन्द्र त्रिकोण में शुभ-ग्रह तथा ३, ६, ११वें भाव में पाप ग्रह होना शुभ है।

## १२-वाणिज्य कर्म प्रारम्भ मुहूर्त

तिथि –२, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५।
वार –सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।
नक्षत्र –अ०, रो०, मृ०, पुन०, उ०-३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, पूर्व भा०, रे०।

### टिप्पणी

लग्न में चन्द्र शुक्र हों, ८वें, १२वें भाव में पाप ग्रह न हों, १०वें, ११वें भाव में शुभ ग्रह हों।

नाम राशि से चन्द्र प्रबल हो।
भू-रुदन दिन को यह मुहूर्त वर्जित है।

मासान्ते दिन संक्रान्तौ वर्षान्ते च हुताशनी।
अमायां भौमवारे च रोदति पंचदिनानि भूः॥

## १३-बंटवारा करने का मुहूर्त

तिथि –२, ३, ५, ७, ११, १३, १५ (दोनों पक्ष)।
वार –रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र।
नक्षत्र –अ०, रो०, मृ०, पुन०, पुष्य, उ०-३, हस्त, चि०, स्वा०, श्र०, ध०, शत०, रे०।
लग्न –लग्न शुभ हो तथा केन्द्र में शुभ ग्रह हो।

## १४-यज्ञ अनुष्ठान आदि का मुहूर्त

तिथि –२, ३, ५, ७, १०, १२, १३, १५ (दोनों पक्ष)।
वार –सोम, बुध, गुरु, शनि।
नक्षत्र –अ०, रो०, मृ०, पुन०, पुष्य, मघा, उ०-३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु०, श्र०, ध०, शत०, रे०।

### टिप्पणी

भू-शयन, भू-रजस्वला, भू-हास्य, एवं भू-रुदन वर्जित है।

लग्न–२, ३, ४, ६, ७, ९, १२वां हो, दशम भाव में सूर्य, चतुर्थ भाव में चन्द्र एवं लग्न में गुरु शुभ है।

गुरु, शुक्र प्रबल मार्गी व उदय हों, यजमान का चन्द्र प्रबल व शुभ हो।

## १५-तन्त्र यन्त्र प्रयोग मुहूर्त

तिथि –२, ३, ५, ७, १०, १२, १३, १५।
वार –रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र।
नक्षत्र –अ०, मृ०, उ० फा०, हस्त, विशाखा, श्रवण।

### टिप्पणी

मद्रबल प्रबल हो, प्रीपित सिद्धि साध्य, शुभ, शोभन, आयुष्मान योगों में शुभ है। ●

भक्ति, शक्ति, बुद्धि, पराक्रम तथा नीति के संगम हैं

# योगेश्वर श्रीकृष्ण

और

## कृष्ण जन्माष्टमी तो साक्षात् सिद्धि पर्व है जिसने कृष्ण-भक्ति सिद्धि सम्पन्न की उसने तो सब कुछ प्राप्त कर लिया

कृष्ण का स्वरूप आज से पांच हजार वर्ष पहले जितना सार्थक था आज भी उतना ही सार्थक है, और आगे भी रहेगा, उनके स्वरूप की व्याख्या, गुणों की व्याख्या, उनकी क्रियाएं कुछ पंक्तियों में समेटी ही नहीं जा सकतीं, कृष्ण का चरित्र ऐसा नहीं था, कि हर व्यक्ति उन्हें अपने से अलग समझ कर एक आदर्श मान कर देखे, अपितु कृष्ण का जीवन चरित्र बालपन से लगाकर निर्वाण तक हर कदम रस से, योग से, माया से, जीवन से ओत-प्रोत था।

कृष्ण की भक्ति के सम्बन्ध में, जीवन चरित्र के सम्बन्ध में, उनकी लीलाओं के सम्बन्ध में जितने ग्रन्थ एवं रचनाएं लिखी गई हैं, उतनी किसी अन्य के सम्बन्ध में नहीं हैं, क्योंकि कृष्ण तो लोक-लोक से जुड़े थे, जिससे हर साधक एक आत्मीयता का, एक प्रेम सम्बन्ध का अनुभव कर सकता है।

### कृष्ण और माया

आप कहीं भी किसी महात्मा के पास प्रवचन सुनने जायेंगे तो यही सुनने को मिलेगा, कि जगत माया स्वरूप, मिथ्या है, इस जगत को छोड़ कर सन्यास धारण कर लो, तभी पूर्ण शुद्धि, शान्ति प्राप्त हो सकेगी, कोई इनसे यह तो पूछे, कि आप कृष्ण को भगवान स्वरूप मानते हैं, पूजा अर्चना करते हैं, उन्हें साक्षात् ब्रह्म कहते हैं, उन साक्षात् भगवान कृष्ण ने तो कभी भी जीवन में कर्म की राह नहीं छोड़ी उन्होंने जीवन को पूरे आनन्द, वैभव के साथ जिया, उनके जीवन का उदाहरण, हर घटना, प्रेरणादायक है, इसीलिए कृष्ण को योगेश्वर श्रीकृष्ण कहा गया है।

**सबसे बड़ा योगी तो गृहस्थ होता है, जो इतने बन्धनों को संभालते हुए भी जीवन यात्रा करता है, और फिर भी साधना, प्रभु का ध्यान रखता है, जिसने अपने जीवन में कृष्ण को समझ लिया, गीता का ज्ञान अपने जीवन में उतार लिया, तो समझ लीजिये कि वह योगी बन गया, गीता में कृष्ण कहते हैं कि—**

यत्र योगेश्वरः कृष्णो, यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयी भूतिर्, ध्रुवा नीतिर्मतिमम ।।
—गीता १८/७८

तात्पर्य यह है कि जहां अर्जुन हैं, वहां कृष्ण हैं, जहां कर्म स्वरूप अर्जुन हैं, वही योगस्वरूप कृष्ण हैं, वहीं विजय, श्रेष्ठता, श्री एवं नीति है।

कृष्ण केवल भक्ति स्वरूप ही नहीं हैं, उनके तो जीवन, कर्म, उनके उपदेश, जो गीता में समाहित हैं, के साथ-साथ नीति-अनीति, आशा-आकांक्षा, मर्यादा-आचरण, प्रत्येक पक्ष को पूर्ण रूप से समझ कर अपने भीतर उतारने का साधन है, कृष्ण की नीति, आदर्श एवं मर्यादा का चरम रूप न हो कर व्यावहारिकता से परिपूर्ण होकर ही दुष्टों के साथ दुष्टता का व्यवहार तथा सज्जनों के साथ श्रेष्ठता का व्यवहार, मित्र और शत्रु की पहिचान, किस नीति से किस प्रकार कार्य निकाला जाय, यह सब आज भी व्यावहारिक रूप में खरे हैं।

कृष्ण का जन्म अन्धकार पूर्ण अर्द्ध रात्रि में हुआ, जो कि इस बात को स्पष्ट करता है, कि घना अंधेरा हो तो दिव्य प्रकाश उत्पन्न होगा, कष्ट और पीड़ा की भी सीमा होती है, कृष्ण का जन्म आशा का संदेश लेकर उपस्थित होता है, और यह रात्रि अपने आपमें एक अत्यन्त शास्त्रोक्त, सिद्ध तांत्रिक तथा मांत्रिक सिद्धि मुहूर्त भी है।

कृष्ण जन्माष्टमी केवल १२ बजे तक जाग कर आरती करने का दिवस नहीं है, यह दिवस तो विशेष साधना का दिवस है, जिस दिन दुःख रूपी अन्धकार को समाप्त कर सुख का दिव्य प्रकाश प्राप्त करने की रात्रि है।

**'गौतमीय तन्त्र'**, 'शारदा तिलक' तथा **'क्रम दीपिका'**, कृष्ण साधना के सम्बन्ध में अत्यन्त उत्तम ग्रन्थ हैं, और **गौतमीय तन्त्र** में लिखा है, विधि-विधान सहित कृष्ण-भक्ति, साधना सम्पन्न करने से भोग एवं ऐश्वर्य की पूर्ण प्राप्ति होती है।

कृष्ण जन्माष्टमी को चार प्रयोग विशेष रूप से सम्पन्न किये जा सकते हैं, ये चार प्रयोग काम्य प्रयोग हैं- १-इच्छा पूर्ति गोविन्द प्रयोग, २-शत्रु बाधा शान्ति कृष्ण प्रयोग, ३-वशीकरण सिद्धि केशव प्रयोग, ४-पुत्रदायक संतान गोपाल प्रयोग।

**कई साधक इस रात्रि को ये चारों प्रयोग सम्पन्न करते हैं, और कई अपने कार्य विशेष की पूर्ति हेतु विशेष एक प्रयोग सम्पन्न करते हैं, लेकिन इतनी बात निश्चित है, कि श्री कृष्ण साधना हेतु किया गया कोई भी कर्म निष्फल नहीं जाता है।**

आगे साधकों हेतु प्रत्येक प्रयोग अलग-अलग स्पष्ट किया जा रहा है, अपना निर्णय स्वयं लेते हुए कृष्ण जन्माष्टमी के इस महान सिद्ध मुहूर्त को साधना कर्म अवश्य सम्पन्न करें—

## १-इच्छा पूर्ति गोविन्द प्रयोग

इस साधना हेतु साधक रात्रि का प्रथम प्रहर बीत जाने के पश्चात् साधना क्रम प्रारम्भ कर अर्द्ध रात्रि के साथ पूर्ण कर मन्त्र जप सम्पन्न करें, इस साधना हेतु- **'इच्छा पूर्ति गोविन्द यन्त्र'**, **'दो गोविन्द कुण्डल'**, तथा **'आठ शक्ति विग्रह'** आवश्यक हैं।

अपने सामने सर्वप्रथम एक बाजोट पर पुष्प ही पुष्प बिछा दें और उन पुष्पों के बीचों-बीच इच्छा पूर्ति यन्त्र स्थापित करें, तथा इस यन्त्र का पूजन केवल चन्दन तथा केसर से ही सम्पन्न करें, अपने सामने कृष्ण का एक सुन्दर

चित्र फ्रेम में मढ़कर स्थापित करें, चित्र के भी तिलक करें तथा प्रसाद स्वरूप पंचामृत हो, जिसमें घी, दूध, दही, शक्कर, तथा गंगाजल हो, इसके अतिरिक्त अन्य नैवेद्य भी अर्पित कर सकते हैं, **इच्छा पूर्ति यन्त्र** के दोनों ओर **गोविन्द कुण्डल** स्थापित करें, तथा कुण्डल पर केसर की टीकी लगायें और दोनों हाथ जोड़ कर कृष्ण का ध्यान करें, कृष्ण का ध्यान कर इनके शक्ति स्वरूप **आठ शक्ति विग्रह** स्थापित करें, ये आठ शक्तियां - लक्ष्मी, सरस्वती, रति, प्रीति, कीर्ति, कान्ति, तुष्टि एवं पुष्टि हैं, प्रत्येक शक्ति विग्रह को स्थापित करते हुए निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

**ॐ लक्ष्म्यै नमः पूर्वदले** — **ॐ सरस्वत्ये नमः आग्नेयदले**
**ॐ रत्ये नमः दक्षिणदले** — **ॐ प्रीत्यै नमः नैऋत्यदले**
**ॐ कीर्त्यै नमः पश्चिमदले** — **ॐ कान्त्ये नमः वायव्यदले**
**ॐ तुष्टयै नमः उत्तरदले** — **ॐ पुष्टयै नमः ईशानदले**

शक्ति पूजन के पश्चात् इच्छा पूर्ति मन्त्र का जप प्रारम्भ किया जाता है, इसकी भी विशेष विधि है, इसमें अपने दोनों हाथों में एक पुष्प अथवा पुष्प की पंखुड़ी लें, और इच्छा पूर्ति मन्त्र का उच्चारण करते हुए उसे अर्पित कर दें।

### इच्छा पूर्ति मन्त्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णायै गोविन्दायै स्वाहा ।।

इस प्रकार १०८ बार यह मन्त्र उच्चारण इसी विधि से सम्पन्न करना है, यह तर्पण प्रयोग पूर्ण हो जाने के पश्चात् पहले से जला कर रखे हुए दीप, अगरबत्ती तथा धूप से आरती सम्पन्न कर प्रसाद ग्रहण करें।

**यदि कोई साधक एक महीने तक प्रतिदिन एक माला मन्त्र जप सम्पन्न करे तो उसका इच्छित कार्य अवश्य ही सम्पन्न हो जाता है।**

## २-शत्रु बाधा शान्ति कृष्ण प्रयोग

कृष्ण का पूरा जीवन शत्रुओं को कभी युद्ध से, कभी नीति से परास्त कर, शान्ति स्थापित कर, धर्म की स्थापना करना रहा है, जहां धर्म है, वहीं श्रीकृष्ण हैं।

जब शत्रु बाधा बहुत बढ़ जाय, तो अपने सामने इस साधना दिवस के दिन अर्द्ध रात्रि के पश्चात् शत्रुहन्ता प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, इसमें श्रीकृष्ण **सुदर्शन यन्त्र** के अतिरिक्त **मन्त्र सिद्ध कृष्ण पाश** तथा **कृष्ण अंकुश** की स्थापना कर विधि-विधान सहित पूजन करना चाहिए, अर्द्ध रात्रि के पश्चात् साधक अपने पूजा स्थान में एक बड़ा दीपक लगायें, दूसरी ओर धूप, अगरबत्ती जलायें, दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर सर्वप्रथम कृष्ण आयुधों का पूजन करें, प्रथम पूजन कृष्ण पाश तथा द्वितीय पूजन कृष्ण अंकुश का करें और पूजन करते समय पूरे समय "ॐ सुचक्रायै स्वाहा" का मन्त्र जप करते रहें।

इस पूजन के पश्चात् सामने एक चावल की ढेरी पर श्रीकृष्ण सुदर्शन यन्त्र स्थापित करें तथा चारों ओर कृष्ण के अस्त्र शस्त्र प्रतीक आठ सुपारी स्थापित करें, ये आठ सुपारी आठ हाथों में स्थित शंख, चक्र, गदा, पद्म, पाश, अंकुश, धनुष तथा शर की प्रतीक हैं, तथा प्रत्येक सुपारी पर कुंकुम, केसर, चावल चढ़ाते हुए निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ शंखाय नमः — ॐ चक्राय नमः
ॐ गदायै नमः — ॐ पद्माय नमः
ॐ पाशाय नमः — ॐ अंकुशाय नमः,
ॐ धनुषे नमः — ॐ शराय नमः

अब अपनी बाधा निवारण तथा शत्रु नाश की इच्छा व्यक्त करते हुए **सुदर्शन यन्त्र** का अपनी सारी पूजन सामग्री से पूजन सम्पन्न कर निम्न मन्त्र का जप सम्पन्न करें—

### मन्त्र

।। ॐ श्रीकृष्णायै असुराक्रान्त भारहारिणी नमः ।।

**इस मन्त्र की पांच माला उसी स्थान पर बैठ कर जप करें तथा दूसरे दिन प्रातः राई मिला कर कृष्ण आयुधों तथा आठों सुपारी को एक लाल कपड़े में बांध कर शत्रु के घर की दिशा में गाड़ दें तो प्रबल से प्रबल शत्रु-भी शान्त हो जाता है।**

## ३-वशीकरण सिद्धि : केशव प्रयोग

कृष्ण तो वशीकरण के साक्षात् स्वरूप हैं, इनकी ही साधना वशीकरण साधना में सर्वोत्तम कही गयी है, कृष्ण जन्माष्टमी के दिन सायंकाल यह पूजन सम्पन्न किया जाता है, सर्वप्रथम अपने सामने एक कांसे की थाली में **'क्लीं यन्त्र'** स्थापित करें, साधक अथवा साधिका सुन्दर वस्त्र धारण करें, सुगन्धित द्रव्यों का, ईत्र आदि का प्रयोग करें, वातावरण अत्यन्त प्रसन्नतामय एवं सुगन्धित होना चाहिए, पूर्व दिशा की ओर मुंह कर यन्त्र को एक थाली में स्थापित कर केसर से पूजा कर एक पुष्प माला यन्त्र को चढ़ाएं तथा दूसरी पुष्प माला स्वयं पहनें।

अब सर्वप्रथम आठ महीषियों का पूजन आठ चावल की ढेरियां बना कर प्रत्येक पर एक-एक सुपारी स्थापित कर सम्पन्न करें, कृष्ण की ये आठ महीषियां हैं—

रुक्मिणी, सत्यभामा, नग्नजित, कालिन्दी, मित्रविन्दा, लक्ष्मणा, जांबवन्ती एवं सुशीला।

अब **'क्लीं यन्त्र'** का पूजन सम्पन्न करें, कुछ शास्त्रों के अनुसार– इस पूजन में सिन्दूर का प्रयोग विशेष रूप से होता है, इसके अतिरिक्त इस पूजन में पुष्प, मौली, सुपारी, चन्दन तथा काले अंजन का भी प्रयोग है, इसे भी मन्त्र जप के साथ-साथ क्लीं यन्त्र को अर्पित करना चाहिए, यह पूजन पूर्ण होने के पश्चात् साधक मन्त्र जप सम्पन्न करें, अर्पित करने वाली सामग्री खत्म हो जाय तो चावल के दाने चढ़ाता रहे।

### मन्त्र

।। क्लीं हृषीकेशाय नमः ।।

इस मन्त्र की ग्यारह माला जप सम्पन्न करना है।

'गौतमीय तन्त्र' **में लिखा है कि पूजन में चढ़ाई गई सामग्री को चूर्ण बना कर यदि थोड़ी मात्रा में हो जिसे दे दिया जाय तो वह साधक के पूर्ण वश में हो जाता है।**

**यदि कोई रासलीला के मध्य में स्थित श्रीकृष्ण का ध्यान कर उक्त मन्त्र का दस हज़ार मन्त्र जप करता है, तो छः महीने के भीतर इच्छित कन्या प्राप्त होती है।**

**जो कन्या कदम वृक्ष पर स्थित कृष्ण का ध्यान कर प्रतिदिन एक हजार मन्त्र जप करे तो उसे ४९ दिनों के भीतर-भीतर इच्छानुसार श्रेष्ठ पति प्राप्त होता है।**

## ४-पुत्रदाय संतान गोपाल प्रयोग

यह साधना प्रयोग इसी रात्रि को पति-पत्नी दोनों साथ में बैठ कर पूर्ण पूजन सम्पन्न करें, अपने सामने दीपक तथा अगरबत्ती जलाएं, थाली में मन्त्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त **'संतान गोपाल यन्त्र'** स्थापित कर उसका पूर्ण विधि से पूजन सामग्री का प्रयोग करते हुए पूजन करें तथा घी, शहद तथा शक्कर, तिल में मिला कर चढ़ाएं, पति-पत्नी दोनों पूर्ण श्रद्धा भक्ति से अपनी कामना पूर्ति की प्रार्थना करें, अपने हाथ में जल ले कर सर्वप्रथम निम्न संकल्प लें—

अस्य श्री सन्तान गोपाल मन्त्रस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः सुतप्रदः कृष्णो देवता ममाभीष्ट-सिद्धये जपे विनियोगः।

तत्पश्चात् कृष्ण का ध्यान कर अपनी इच्छा पूर्ति की प्रार्थना कर **"गोपाल माला"** से निम्न मन्त्र की पांच माला मन्त्र जप सम्पन्न करें।

### सन्तान गोपाल मन्त्र

देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वमहं शरणं गतः ।।

मन्त्र जप पूर्ण हो जाने के पश्चात् कृष्ण आरती सम्पन्न कर इस यन्त्र को दूसरे दिन प्रातः स्नान कर अपने शयन कक्ष में स्थापित कर दें, तो साधक को निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है।

**कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व ऐसा सिद्ध पर्व है, जो हर बाधा से पूर्ण मुक्ति दिला सकता है, इस पर्व के महत्व को समझते हुए इसका पूर्ण लाभ अवश्य प्राप्त करना चाहिए।** ●

# क्या आवाज को सुरीला बनाया जा सकता है ?

**आयुर्वेद में जो उपचार हैं उनका प्रभाव स्थायी रहता है, और आयुर्वेदिक औषधियों के सेवन से किसी भी प्रकार का 'साइड इफेक्ट' भी नहीं रहता, कुछ विशेष घरेलू उपचार 'चरक संहिता' से।**

**वा**णी व्यक्तित्व का सबसे प्रधान अंग है, आवाज के माध्यम से ही किसी को प्रभावित किया जा सकता है, शरीर, सुन्दर-स्वस्थ हो और आवाज मरी-मरी सी, तो कल्पना कीजिये उस व्यक्ति के प्रभाव का, स्त्री सुन्दर है, और जैसे ही मुंह खोले तो लगे जैसे बम फूटा हो ! तो क्या सारी सुन्दरता खाक में नहीं मिल जाती ? वाणी तो मधुर, प्रभावपूर्ण एवं व्यक्तित्व के अनुरूप होनी चाहिए।

**नीचे कुछ विशेष घरेलू नुस्खे दिये जा रहे हैं, जिन्हें अपना कर आप भी अपनी आवाज में मधुरता भर सकते हैं, सुरीला बना सकते हैं।**

१-मुलहठी १५ ग्राम, आंवल सूखा १५ ग्राम, छोटी इलायची ३ ग्राम, आम का सूखा बौर १५ ग्राम तथा मिश्री २० ग्राम लेकर इन सबको अच्छी तरह पीस कर कपड़े से छान करके चूर्ण बना लें, इस चूर्ण को काले मुनक्कों के साथ सिल पर अच्छी तरह से पीस लें, इस मिश्रण की काले चने के बराबर गोलियां बना लें, आवाज खराब हो गई हो या गला खराब हो गया हो, तो इन गोलियों को चूसें, इनसे खांसी नहीं आएगी, गला साफ होगा और आवाज मधुर हो जाएगी।

२-यदि आपका गला बैठ गया हो, तो **कूजा मिश्री** मुंह में रखकर धीरे-धीरे चूसें, मिश्री के प्रभाव से तुरन्त आपका बन्द गला खुल जाएगा, व बैठा गला साफ हो जाएगा, यदि कूजा मिश्री न मिले, तो उसके स्थान पर **कबाब चीनी** का प्रयोग करने से भी फायदा पहुंचता है।

३-काली मिर्च १० ग्राम, मुलहठी १० ग्राम व मिश्री २० ग्राम, इस अनुपात में इन सबको लेकर इन्हें पीस लें और चूर्ण बना लें, इस चूर्ण को किसी खुले मुंह वाली शीशी में रखें, प्रतिदिन सुबह शाम इस चूर्ण को एक चुटकी शहद के साथ लें, कुछ दिनों बाद आपकी आवाज का सुरीलापन बढ़ जाएगा।

४-खरबूजा, तरबूज और ककड़ी—इन तीनों के बीज लीजिए, इन बीजों के छिलके उतार दीजिए, अब इन बिना छिलकों के बीजों को पीस लीजिए, कुछ दाने छोटी इलायची के, व करीब २० दाने काली मिर्च के भी इनमें पीस लीजिए, सबका चूर्ण बना लीजिए, दिन में तीन बार नियमित रूप से इस चूर्ण को बकरी के दूध के साथ सेवन करने से दिमाग और दिल की शक्ति बढ़ती है, स्मरण शक्ति तेज होती है, तथा वाणी में मिठास का गुण उत्पन्न होता है।

५-अदरक की गांठ लेकर उसे अन्दर से खाली कर लीजिए, अब उसमें थोड़ी सी हींग व काला नमक भर कर धीमी आंच पर सेंक लीजिए, सुर्ख हो जाने पर उसको पीस लीजिए, दोनों वक्त खाने के बाद इसका सेवन कीजिए, इसके सेवन करने से बलगम और पुराना नजला बिल्कुल समाप्त हो जाता है, यह बहुत ही उपयोगी उपचार है। ●

( पृष्ठ संख्या ८ का शेष भाग )

इसके पश्चात् भगवान शिव पर और इन सभी यन्त्रों पर अबीर-गुलाल और अक्षत चढ़ावें तथा उन्हें पुष्प तथा पुष्पमाला सर्मपित करें।

तत्पश्चात् सामने अगरबत्ती व दीपक जलाकर नैवेद्य रखें, तथा फल भी सर्मपित करें।

इसके बाद सर्व काम्य सिद्धि पैंकेट में जो **'रुद्राक्ष माला'** है, उसके द्वारा मन्त्र जप करें, इसमें रुद्राक्ष माला सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, इसमें ग्यारह माला जप इन यन्त्रों और विग्रह के सामने करना आवश्यक है।

## पहले सोमवार का मन्त्र

।। ॐ लक्ष्मी प्रदाय ह्रीं ऋणमोचने श्री देहि देहि शिवाय नमः ।।

## दूसरे सोमवार का मन्त्र

।। ॐ महाशिवाय वरदाय ह्रीं ऐं काम्य सिद्धि रुद्राय नमः ।।

## तीसरे सोमवार का मन्त्र

।। ॐ महादेवाय सर्वकार्य सिद्धि देहि देहि कामेश्वराय नमः ।।

## चौथे सोमवार का मन्त्र

।। ॐ रुद्राय शत्रु संहारय क्लीं कार्यसिद्धाय महादेवाय फट् ।।

**ये सभी मन्त्र अद्वितीय और महत्वपूर्ण हैं, यह हम लोगों का सौभाग्य है कि हमारे जीवन काल में ऐसा महत्वपूर्ण अवसर उपस्थित हुआ है, जिसका हम पूरा-पूरा लाभ उठा सकते हैं।**

प्रत्येक सोमवार को मन्त्र जप करने के बाद इन सभी यन्त्रों को अलग पात्र में रख देना चाहिए और नित्य इनके सामने सुबह शाम अगरबत्ती व दीपक लगा कर दिन में एक बार 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र की एक माला अवश्य फेरनी चाहिए।

मिट्टी से बने शिवलिंग को भी इसी सामग्री के साथ रख देना चाहिए और नित्य संक्षिप्त पूजा होनी चाहिए, अगले सोमवार को इसी मिट्टी को वापिस कूट पीस कर उपयोग किया जा सकता है, अथवा पहले से ही चार सोमवार के लिए एक-एक किलो के चार पैंकेट मिट्टी के मंगवा कर रख देने चाहिये, और उनका उपयोग करना चाहिये।

यदि प्रत्येक सोमवार के मिट्टी का पैंकेट अलग-अलग हैं, तो सोमवार की शाम उस मिट्टी से बने हुए शिवलिंग को किसी नदी, तालाब या समुद्र में प्रवाहित कर देना चाहिए, अथवा किसी शिव मन्दिर में जा कर चुपचाप रख देना चाहिए।

२५ अगस्त १९९१ को श्रावण पूर्णिमा है, अतः इस दिन सिद्ध किये हुए यन्त्रों को या पूजा स्थान में लाल वस्त्र बिछा कर स्थापित कर किसी स्थान पर रख देना चाहिए, यदि यह संभव न हो तो समुद्र या नदी में विसर्जित किये जा सकते हैं, पर ज्यादा अच्छा यही होगा कि इन्हें अपने पूजा स्थान में रख दें या घर में किसी पवित्र स्थान पर स्थापित कर दें।

**भगवान शिव तो सर्वाधिक दयालु और तुरन्त वरदान देने वाले महादेव हैं, अतः इन प्रयोगों एवं साधनाओं का फल तुरन्त प्राप्त होता है, और साधक शीघ्र ही मनोवांछित सफलता प्राप्त करने में सफल हो पाता है। ●**

# कुछ अनुभवजन्य प्रामाणिक प्रयोग

पिछले कुछ अंकों में 'नीली पुस्तक' से कुछ प्रयोग देने शुरू किये हैं, जो कि अत्यन्त कम व्यय वाले और मध्यम वर्ग के लिए ज्यादा उपयोगी हैं, इनका प्रभाव भी उसी समय मिल जाता है, और हाथों-हाथ इसका फल भी प्राप्त हो जाता है।

इस बार ऐसे ही कुछ विशेष प्रयोग पत्रिका पाठकों के लिए प्रस्तुत हैं, जो उनके लिए उपयोगी हैं।

## १—रोग-मुक्ति प्रयोग

यों तो रोग-मुक्ति के कई छोटे-छोटे प्रयोग दिये हैं, परन्तु यह प्रयोग अपने आपमें आश्चर्यजनक, अनुकूल है।

रविवार के दिन पानी का एक गिलास भर दें और उसमें **'हेम गर्भ गुटिका'** डाल दें, फिर उस पानी पर हनुमान का नाम ले कर सात बार फूंक मारे और वह हेम गर्भ गुटिका बाहर निकाल दें, तथा वह पानी सात बार रोगी के सिर पर घुमा कर घर के बाहर फेंक दें, तो उसी क्षण से रोगी ठीक होने लगता है, और ऐसा करने पर जल्दी ही स्वास्थ्य लाभ कर लेता है।

**पर इस बात का ध्यान रहे कि हेम गर्भ गुटिका कई रोगियों पर आजमाई जा सकती हैं, और इसका आश्चर्यजनक लाभ प्राप्त होता है।**

## २—शीघ्र विवाह प्रयोग

इस पुस्तक में हमें यह विशेष टोटका प्राप्त हुआ है, और आजमाने पर इसके परिणाम अत्यन्त अनुकूल अनुभव हुए हैं।

**शुक्रवार के दिन शादी की इच्छा रखने वाला पुरुष, लड़की स्नान कर भगवान शिव का पूजन कर उन्हें १०८ बिल्व पत्र या पुष्प चढ़ाएं, और फिर यह मन में कामना करें कि मेरा शीघ्र विवाह सम्पन्न हो जाय, और**

**उसमें किसी प्रकार की बाधा या परेशानी न आये।**

साथ ही भगवान शिव पर **'२१ रुद्रल'** चढ़ा दें, उसी क्षण से वातावरण अनुकूल होने लगता है, और वह जिससे भी विवाह की आकांक्षा रखता है, या रखती है, तो मनोवांछित स्थान पर उसका विवाह सम्पन्न हो जाता है।

## ३—शत्रु स्तम्भन प्रयोग

एक से अधिक शत्रु हों और शत्रुओं के कारण हर समय चिन्ता रहती हो, तो मिट्टी के बर्तन में अनिवार को श्मशान से भस्म लाकर उस मिट्टी के बर्तन में रख दें, उसके मध्य में एक **'तांत्रोक्त नारियल'** पीले डोरे में लपेट कर रखें, पात्र में एक कागज पर शत्रु का नाम लिख दें, और बर्तन का मुंह बन्द कर कम से कम दो फुट गहरा गड्ढा खोद कर गाड़ दें, और उसके ऊपर भारी पत्थर रख दें, इससे प्रबल से प्रबल शत्रु भी शान्त हो जाता है।

## ४—शारीरिक कमजोरी मिटाने का प्रयोग

**शारीरिक दृष्टि से जब विशेष कमजोरी, स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहे, जिस प्रकार से स्वास्थ्य रहना चाहिए, उस प्रकार से नहीं रहे, गृहस्थ जीवन में आनन्द न आये, तो यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।**

सोमवार को सुबह **'स्फटिक शिवलिंग'** के ऊपर दूध की धारा चढ़ाएं तथा 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र बोलते रहें, रात्रि को भी यह प्रयोग करें तथा चढ़ाये गये दूध को स्वयं ग्रहण कर लें, यह स्फटिक शिवलिंग अपने भुजा पर बांध कर अथवा जेब में रख कर सोवें, तो इससे किसी भी प्रकार की कमजोरी दूर हो जाती है।

## ५—भाग्योदय प्रयोग

यदि हर कार्य में बाधाएं आ रही हों, किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिल रही हो, और पग-पग पर अड़चनें आ रही हों, तो **'बजरंग विग्रह'** ले कर मंगलवार के दिन अपने ऊपर घुमा कर किसी दान लेने वाले व्यक्ति को कुछ धनराशि के साथ वह बजरंग विग्रह उसे दे दिया जाय, तो खुद से सम्बन्धित दुर्भाग्य हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है।

## ६—स्वप्न में प्रश्न का उत्तर जानने के लिए

**कभी-कभी कोई प्रश्न ऐसा सामने आकर खड़ा हो जाता है, कि उसका निर्णय तुरन्त लेना पड़ता है, और मन यह नहीं स्पष्ट कर पाता कि क्या करना चाहिए, तब उस प्रश्न को लिख कर वह कागज तथा** एक विरूपाक्ष **सिरहाने रख देना चाहिए, और फिर तकिये पर सिर लगा कर सो जाना चाहिए, तो निश्चय ही स्वप्न में उस प्रश्न का उत्तर प्राप्त हो जाता है, और जो वह उत्तर प्राप्त होता है, वह बिल्कुल प्रामाणिक और सही होता है।**

नोट :—हेमगर्भ गुटिका-३०)रु०, इक्कीस रुद्रल-६०)रु०, तांत्रोक्त नारियल-२१)रु०, स्फटिक शिवलिंग-५१)रु०, बजरंग विग्रह-२४)रु०, विरूपाक्ष-१०)रु०। ●

## सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

| साधना नाम | पृष्ठ संख्या | सामग्री नाम | न्यौछावर |
|---|---|---|---|
| श्रावण मास : शिव साधना | ५ | सर्व कामना सिद्धि पैकेट | ३००)रु० |
| कामाख्या तन्त्र साधना | ६ | कामाक्षी यन्त्र | १५०)रु० |
| | | कामरूप गुटिका | १०५)रु० |
| | | १६ काम वज्र | ८०)रु० |
| हरियाली शनैश्चरी अमावस्या | १३ | शनि महायन्त्र | १२०)रु० |
| | | शनि भार्या प्रतिमा | ६०)रु० |
| | | शनि मुद्रिका | ६०)रु० |
| | | शनैश्चरी माला | १०५)रु० |
| जीवन में सफलता के पांच सूत्र | १७ | छत्तीसा यन्त्र मुद्रिका | ६०)रु० |
| | | चौबीसा यन्त्र मुद्रिका | ४५)रु० |
| | | कामदेव यन्त्र मुद्रिका | ६०)रु० |
| | | गन्धर्व यन्त्र मुद्रिका | ४५)रु० |
| | | सरस्वती यन्त्र मुद्रिका | ३०)रु० |
| नागपंचमी प्रयोग | २१ | नागराज मुद्रिका | ६०)रु० |
| सन्तान प्राप्ति का नागार्जुन प्रयोग | २२ | नागार्जुन गुटिका | १२०)रु० |
| सुवर्ण गौरी साधना | २५ | सुवर्ण गौरी पद्म | १५०)रु० |
| | | १६ सिद्ध शक्ति काम्य फल | १२०)रु० |
| | | सुवर्ण गौरी अनंग माला | १५०)रु० |
| कृष्ण जन्माष्टमी प्रयोग— | ३३ | — | — |
| १-इच्छापूर्ति गोविन्द प्रयोग | ३४ | इच्छापूर्ति गोविन्द यन्त्र | ६०)रु० |
| | | दो गोविन्द कुण्डल | ४०)रु० |
| | | ८ शक्ति विग्रह | ४०)रु० |
| २-शत्रु बाधा शान्ति प्रयोग | ३५ | सुदर्शन यन्त्र | १०५)रु० |
| | | कृष्ण पाश | ३०)रु० |
| | | कृष्ण अंकुश | ३०)रु० |
| ३-वशीकरण सिद्धि : केशव प्रयोग | ३६ | क्लीं यन्त्र | १२०)रु० |
| ४-पुत्रदाय सन्तान गोपाल प्रयोग | ३६ | सन्तान गोपाल यन्त्र | १५०)रु० |
| | | गोपाल माला | १५०)रु० |

रजि० नं०.३५३०५/८१

पोस्टल एल०आर०जे० ११६७/८६-८७

## गणेशाय नमस्तुभ्यं सर्व सिद्धि प्रदायक

## बाधारहित सर्वकामना पूर्ति युक्त

### सौभाग्य हेतु

# पारद गणपति

- पारद गणपति की स्थापना ही संकटों का निवारण है।
- पारद गणपति की स्थापना ऋद्धि-सिद्धि का आगमन है।
- जहां पारद गणपति स्थापित हैं, वहां कोई दोष, भय नहीं रह सकता।
- पारे से निर्मित मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **"पारद गणपति"** जिसकी पूजा तो देवता भी करते हैं।
- अपने निवास में, कार्य स्थल में अवश्य स्थापित करें।

### कैसे प्राप्त करें ?

* यदि आप पत्रिका सदस्य हैं, तो इस उपहार को सर्वथा मुफ्त में प्राप्त कर सकते हैं।
* धनराशि अग्रिम न भेजें, केवल एक कागज पर लिख कर भेज दें, कि आप **"पारद गणपति"** विग्रह प्राप्त करना चाहते हैं।
* सन् १९९२ से अगले पांच वर्ष के लिए **"पंच वर्षीय पत्रिका सदस्यता स्कीम"** के अन्तर्गत मात्र ४८०)रु० तथा ३०)रु० डाक व्यय जोड़ कर उपरोक्त दुर्लभ विग्रह सुरक्षित रूप से आपको भेज देंगे।
* वी०पी० छूटने पर आपको अगले पांच साल का पत्रिका सदस्य बना कर सम्बन्धित रसीद भिजवा देंगे, इस प्रकार आप अगले पांच वर्षों तक पत्रिका शुल्क भेजने के झंझट से बच जाएंगे।
* और यह विश्व का दुर्लभ **"गणपति विग्रह"** आपको सर्वथा मुफ्त में प्राप्त हो जायेगा।

### नोट :

- **यह सुविधा भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्यों को ही प्राप्त हो सकेगी।**
- **इस पत्रिका के प्राप्त होने के एक महीने के भीतर-भीतर आदेश भेजने वाले को ही यह "गणपति विग्रह" भेजा जा सकेगा, इसके बाद आदेश आने पर उन पर विचार नहीं किया जा सकेगा।**

**सम्पर्क : मन्त्र-तन्त्र यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज०)**